RNI No. GUJHIN/2011/39228
GARVI GUJARAT
गरवी गुजरात
गरवी गुजरात
अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक
वर्ष : 15
अंक : 309
दि. 13.03.2026, शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

मुख्य चुनाव आयुक्त पर हटाने की तैयारी: 200 से अधिक सांसदों का नोटिस, चुनावी व्यवस्था पर बड़ा संवैधानिक विवाद

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की चुनावी व्यवस्था और लोकतांत्रिक संस्थाओं के केंद्र में इस समय एक बड़ा संवैधानिक विवाद खड़ा हो गया है। मुख्य चुनाव आयुक्त Gyanesh Kumar को पद से हटाने की मांग को लेकर विपक्षी दलों ने बड़ा कदम उठाया है। लोकसभा और राज्यसभा के 200 से अधिक सांसदों ने एक ऐतिहासिक नोटिस पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसे जल्द ही संसद के किसी एक सदन में पेश किए जाने की तैयारी है। राजनीतिक हलकों में इस घटनाक्रम को बेहद गंभीर माना जा रहा है, क्योंकि देश के लोकतांत्रिक इतिहास में पहली बार किसी मुख्य चुनाव आयुक्त को पद से हटाने की औपचारिक प्रक्रिया शुरू करने की कोशिश की जा रही है।

सूत्रों के अनुसार विपक्षी दलों ने आरोप लगाया है कि मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में ज्ञानेश कुमार ने अपने संवैधानिक पद की निष्पक्षता बनाए रखने में विफलता दिखाई है। विपक्ष का कहना है कि चुनावी प्रक्रियाओं और जांचों में उनका रवैया पक्षपातपूर्ण रहा है और इससे चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल खड़े हुए हैं। यही कारण है कि विपक्ष ने इस मामले को संसद के माध्यम से उठाने का फैसला किया है। भारत में मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की प्रक्रिया बेहद कठिन और जटिल मानी जाती है। संविधान के अनुसार उन्हें उसी प्रक्रिया के तहत हटाया जा सकता है, जिस प्रक्रिया से Supreme Court of India के किसी न्यायाधीश को पद से हटाया जाता है। इसका मतलब है कि इस प्रक्रिया को शुरू करने के लिए संसद के सदस्यों की न्यूनतम संख्या का समर्थन अनिवार्य होता है। नियमों के अनुसार यदि यह नोटिस लोकसभा में पेश किया जाता है तो कम से कम 100 सांसदों के हस्ताक्षर आवश्यक होते हैं, जबकि राज्यसभा में इसे प्रस्तुत करने के लिए कम से कम 50 सांसदों का समर्थन जरूरी होता है।

मौजूदा मामले में विपक्ष का दावा है कि उसके पास दोनों सदनों में आवश्यक संख्या से कहीं अधिक समर्थन मौजूद है। बताया जा रहा है कि नोटिस पर लोकसभा और राज्यसभा को मिलाकर 200 से अधिक सांसदों ने हस्ताक्षर किए हैं। इस संख्या में कई प्रमुख विपक्षी दलों के सांसद शामिल हैं। विपक्षी दलों का कहना है कि यह कदम किसी राजनीतिक लाभ के लिए नहीं बल्कि

देश की चुनावी व्यवस्था की निष्पक्षता को बनाए रखने के लिए उठाया गया है। एक वरिष्ठ सूत्र के अनुसार मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ सात गंभीर आरोप लगाए गए हैं। इन आरोपों में पद पर रहते हुए पक्षपाती और भेदभावपूर्ण आचरण करने से लेकर चुनावी धोखाधड़ी से जुड़े मामलों की जांच में जानबूझकर बाधा डालने तक के आरोप शामिल बताए जा रहे हैं। इसके अलावा विपक्ष ने यह भी आरोप लगाया है कि बड़ी संख्या में लोगों को मताधिकार से वंचित किए जाने से संबंधित मामलों में भी उचित कार्रवाई नहीं की गई।

विपक्षी दलों ने पहले भी कई बार मुख्य चुनाव आयुक्त पर सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि चुनाव आयोग की कुछ कार्रवाइयों से सत्तारूढ़ दल को राजनीतिक लाभ मिला है। विशेष रूप से चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम को लेकर विपक्ष लगातार आलोचना करता रहा है। विपक्षी नेताओं का कहना है कि इस प्रक्रिया का इस्तेमाल मतदाता सूची में बदलाव कर राजनीतिक संतुलन प्रभावित करने के लिए किया जा रहा है। हालांकि इन आरोपों को सत्तारूढ़ पक्ष और चुनाव आयोग दोनों ही खारिज करते रहे हैं।

इस पूरे घटनाक्रम में विपक्षी दलों के बीच दिलचस्प राजनीतिक तालमेल भी देखने को मिला है। भले ही Indian National Congress सहित कई दल INDIA Alliance के तहत एकजुट हैं, लेकिन इस मुद्दे पर Aam Aadmi Party ने भी विपक्ष का साथ दिया है। हालांकि आम आदमी पार्टी औपचारिक रूप से इस गठबंधन का हिस्सा नहीं है, फिर भी इस मामले में उसके सांसदों ने भी नोटिस पर हस्ताक्षर किए हैं। सूत्रों के अनुसार नोटिस पर हस्ताक्षर करने के लिए सांसदों में इतना उत्साह था कि आवश्यक संख्या पूरी हो जाने के बाद भी कई सांसद समर्थन देने के लिए आगे आए। अब इस पूरे मामले में अगला कदम संसद की कार्यवाही पर निर्भर करेगा। जब यह नोटिस औपचारिक रूप से संसद में प्रस्तुत किया जाएगा, तो संबंधित सदन के अध्यक्ष—यानी लोकसभा में स्पीकर या राज्यसभा में चेयरमैन—यह तय करेंगे कि इसे स्वीकार किया जाए या नहीं। यदि अध्यक्ष इस नोटिस को स्वीकार कर लेते हैं, तो आरोपों की जांच के लिए एक विशेष समिति गठित की जाती है। यह समिति आरोपों की जांच करती है और अपनी रिपोर्ट संसद के सामने पेश करती है। यदि जांच समिति अपनी रिपोर्ट में आरोपों को सही पाती है, तो इसके बाद संसद के दोनों सदनों में विशेष बहुमत से प्रस्ताव पारित होना आवश्यक होता है। यह बहुमत साधारण बहुमत से अलग होता है और इसमें उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों के साथ-साथ कुल सदस्य संख्या का भी विशेष अनुपात शामिल होता है। यदि दोनों सदनों में यह प्रस्ताव पारित हो जाता है, तभी राष्ट्रपति मुख्य चुनाव आयुक्त को उनके पद से हटा सकते हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह मामला केवल एक व्यक्ति से जुड़ा विवाद नहीं है, बल्कि यह देश की चुनावी व्यवस्था और लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता से भी जुड़ा हुआ है। आने वाले दिनों में संसद में इस मुद्दे को लेकर तीखी बहस और राजनीतिक टकराव देखने को मिल सकता है। फिलहाल पूरे देश की नजर इस बात पर टिकी हुई है कि संसद के अध्यक्ष इस नोटिस पर क्या निर्णय लेते हैं और क्या यह मामला वास्तव में उस ऐतिहासिक मुकाम तक पहुंचता है, जहां पहली बार किसी मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की प्रक्रिया औपचारिक रूप से आगे बढ़ती है।

समुद्र की गहराइयों में बहता अदृश्य जलप्रपात: पृथ्वी का सबसे ऊंचा झरना

(जीएनएस)। कोपेनहेगन। जब भी दुनिया के सबसे ऊंचे झरनों की चर्चा होती है, तो लोगों के मन में पहाड़ों से गिरते पानी की भव्य तस्वीर उभरती है। सामान्यतः माना जाता है कि पृथ्वी का सबसे ऊंचा झरना पहाड़ों और घाटियों के बीच स्थित होता है, लेकिन वैज्ञानिकों ने समुद्र की गहराइयों में एक ऐसा अद्भुत प्राकृतिक रहस्य खोजा है, जो इस धारणा को पूरी तरह बदल देता है। यह झरना जमीन पर नहीं, बल्कि समुद्र के भीतर छिपा हुआ है और इसकी ऊंचाई दुनिया के किसी भी स्थलीय झरने से कहीं अधिक है।

इस अद्भुत जलप्रपात को Denmark Strait Cataract के नाम से जाना जाता है, जो Greenland और Iceland के बीच समुद्र के भीतर मौजूद है। यह समुद्री जलप्रपात वास्तव में पृथ्वी के सबसे बड़े और ऊंचे प्राकृतिक जलप्रपातों में गिना जाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार इसकी ऊंचाई लगभग 3,500 मीटर यानी करीब 11,500 फीट से भी अधिक है।

तुलना के लिए यदि दुनिया के सबसे ऊंचे स्थलीय झरने Angel Falls को देखें, जिसकी ऊंचाई लगभग 979 मीटर है, तो यह समुद्री झरना उससे लगभग तीन गुना अधिक ऊंचा है। यही कारण है कि कई वैज्ञानिक इसे पृथ्वी का वास्तविक सबसे ऊंचा झरना मानते हैं, भले ही यह समुद्र की सतह के नीचे छिपा हुआ हो और आम आंखों से दिखाई न देता हो। दिलचस्प बात यह है कि यह झरना किसी पहाड़ या चट्टान से गिरते पानी के कारण नहीं बनता। समुद्र के भीतर बनने वाले इस विशाल जलप्रपात का कारण पानी के घनत्व में अंतर है। आर्कटिक क्षेत्र से आने वाला पानी

अत्यधिक ठंडा और नमकीन होता है। ठंडा और नमकीन पानी अपेक्षाकृत भारी होता है, इसलिए जब यह अपेक्षाकृत गर्म और हल्के समुद्री पानी के संपर्क में आता है, तो वह तेजी से नीचे की ओर बैठने लगता है। यही प्रक्रिया समुद्र के भीतर एक विशाल जलप्रपात का रूप ले लेती है, जहां भारी पानी नीचे की ओर बहता है और हल्का पानी उसके ऊपर रहता है। इस प्रक्रिया को समझने के लिए वैज्ञानिक इसे समुद्री धाराओं के जटिल तंत्र का हिस्सा मानते हैं। जब आर्कटिक क्षेत्र से ठंडा और नमकीन पानी बहते हुए इस संकरे समुद्री मार्ग तक पहुंचता है, तो वह नीचे की ओर गिरते हुए हजारों मीटर गहराई तक जाता है। यह गिरावट इतनी विशाल और शक्तिशाली होती है कि इसे दुनिया का सबसे बड़ा जलप्रपात कहा जाता है। हालांकि यह घटना समुद्र की गहराइयों में घटित होती है, इसलिए इसे देखने के लिए विशेष वैज्ञानिक उपकरणों और समुद्री अनुसंधान तकनीकों की आवश्यकता पड़ती है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि Denmark Strait Cataract केवल एक अद्भुत प्राकृतिक घटना ही नहीं है, बल्कि यह पृथ्वी के जलवायु तंत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विशाल समुद्री जलप्रपात समुद्र की गहरी धाराओं को सक्रिय करता है और दुनिया भर में समुद्री जल के प्रवाह को बनाए रखने में मदद करता है। समुद्र की ये गहरी धाराएं पृथ्वी के तापमान को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

दरअसल, समुद्री धाराएं पृथ्वी की जलवायु प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं। वे गर्म और ठंडे पानी को विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचाकर वैश्विक तापमान को संतुलित करती हैं। यदि ये धाराएं बाधित हो जाएं, तो पृथ्वी के कई हिस्सों में जलवायु असंतुलन पैदा हो सकता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो यह समुद्री जलप्रपात केवल एक भौगोलिक अजूबा ही नहीं, बल्कि पृथ्वी के पर्यावरणीय संतुलन का भी एक महत्वपूर्ण घटक है। इसके अलावा इस समुद्री जलप्रपात का प्रभाव समुद्री जीवन पर भी पड़ता है। जब ठंडा और भारी पानी नीचे की ओर गिरता है, तो उसके साथ समुद्र की गहराइयों में मौजूद पोषक तत्व ऊपर की ओर आने लगते हैं। ये पोषक तत्व समुद्री जीवों के लिए भोजन का महत्वपूर्ण स्रोत बनते हैं। इस प्रक्रिया से समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूती मिलती है और विभिन्न प्रकार के समुद्री जीवों को जीवित रहने के लिए आवश्यक पोषण प्राप्त होता है।

समुद्री वैज्ञानिकों के अनुसार, इस प्रकार के समुद्री जलप्रपात पृथ्वी के महासागरों के भीतर कई स्थानों पर बनते हैं, लेकिन Denmark Strait Cataract का आकार और शक्ति उन्हें सबसे अधिक प्रभावशाली बनाती है। इसकी विशालता और गहराई इसे पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री प्राकृतिक चमत्कारों में से एक बनाती है। आज जब वैज्ञानिक महासागरों की गहराइयों का अध्ययन कर रहे हैं, तब इस प्रकार की खोजें हमें यह समझने में मदद करती हैं कि पृथ्वी का प्राकृतिक तंत्र कितना जटिल और अद्भुत है। समुद्र की सतह पर हमें केवल लहरें और जलराशि दिखाई देती है, लेकिन उसके नीचे एक पूरी दुनिया सक्रिय रहती है, जहां विशाल धाराएं, गहरे घाटियां और ऐसे अद्भुत जलप्रपात मौजूद हैं जिनकी कल्पना करना भी कठिन है।

इस खोज ने वैज्ञानिकों के लिए महासागरों के अध्ययन के नए द्वार खोल दिए हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि यदि समुद्र की गहराइयों का और गहन अध्ययन किया जाए, तो भविष्य में और भी ऐसे आश्चर्यजनक प्राकृतिक रहस्य सामने आ सकते हैं। यही कारण है कि आज विश्व भर के समुद्री वैज्ञानिक महासागरों के गहरे हिस्सों को समझने के लिए नई तकनीकों और उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि पृथ्वी पर मौजूद सबसे ऊंचा झरना किसी पर्वत की चोटी से नहीं गिरता, बल्कि समुद्र की गहराइयों में चुपचाप बहता रहता है। यह अदृश्य जलप्रपात हमें यह याद दिलाता है कि प्रकृति के रहस्य अभी भी अनगिनत हैं और मानव ज्ञान की यात्रा अभी भी जारी है।

ग्रामीण लोकतंत्र, गैर-पक्षपातपूर्ण व्यवस्था और विश्वास एवं प्रेम पर आधारित समाज के निर्माण की आवश्यकता

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। आज हमें एक ऐसे लोकतंत्र की आवश्यकता है जो हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में शांतिपूर्ण परिवर्तन लाने में सहायक हो। ग्राम स्तर पर हमें किसी न किसी प्रकार की लोकतांत्रिक व्यवस्था चाहिए, जिसमें लोग प्रशासन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लें। लेकिन वर्तमान लोकतांत्रिक संरचना में ऐसा नहीं है। आज लोकतंत्र जनता द्वारा नहीं, बल्कि जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाता है। यह माना जाता है कि उन प्रतिनिधियों को जनता की ओर से काम करना चाहिए। लेकिन वास्तविकता में, समय के साथ, राजनीतिक शक्ति अनिवार्य रूप से राजधानी में केंद्रित हो जाती है। आज की "राजनीति" "राजधानी की राजनीति" है। हमें अब एक ऐसे लोकतंत्र की आवश्यकता है जो जनता द्वारा चलाया जाए और जनता के जीवन को पुनर्निर्मित करने के लिए चलाया जाए।

शून्य त्रुटि एजेंसी

ग्राम स्तर पर ऐसी नई लोकतांत्रिक संरचना बनाने के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था में आमूल-चूल पुनर्विचार और एक बिल्कुल अलग स्वरूप की आवश्यकता है। हम एक

ऐसी लोकतांत्रिक व्यवस्था की कल्पना कर सकते हैं जिसमें लोग एक साथ बैठकर आपस में खुलकर संवाद कर सकें, खुली चर्चा और विचार-विमर्श के माध्यम से अपने मतभेदों का समाधान कर सकें और सभी द्वारा तय की गई किसी विधि से निर्णय ले सकें। लोकतंत्र और अधिनायकवाद के बीच निश्चित रूप से विरोध है। लेकिन लोकतंत्र और इस गैर-पक्षपात की बात के बीच ऐसा कोई विरोध नहीं है। अगर हम गौर से देखें तो हर अच्छा-बुरा परिवार गैर-पक्षपातपूर्ण लोकतंत्र का उदाहरण है। इसमें सदस्य खुलकर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं और मिलकर निर्णय ले सकते हैं। यह मॉडल न केवल परिवार के लिए, बल्कि समाज की कई अन्य संस्थाओं के लिए भी एक आदर्श बन सकता है।

यही लोकतंत्र का मूल तत्व है। विविधता को मिटाना नहीं चाहिए, बल्कि विविधता में एकता स्थापित करनी चाहिए। लोकतंत्र बल या दबाव से लोगों को एकजुट नहीं करता, बल्कि सद्भाव, सामंजस्य और सहयोग के माध्यम से एकजुट करता है। समाज में यह प्रक्रिया उच्च सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के बिना सफल नहीं हो सकती।

यहां आतंकवाद का भी जिक्र हुआ। आतंकवाद का मुख्य कारण आपसी विश्वास की कमी है। आपसी विश्वास के बिना, इस तरह की घटनाएं और प्रतिक्रियाएं होना तय है। इससे समाज की ताकत लगातार कमजोर होती जाएगी। आपसी सद्भाव और विश्वास पैदा किए बिना आतंकवाद का उन्मूलन संभव नहीं है। और अगर यह विश्वास पैदा होता है, तो यह केवल सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों के आधार पर ही संभव है। आपसी प्रेम को बढ़ावा देना चाहिए, इसमें खतरे और जोखिम होंगे, लेकिन यह जोखिम उठाना उचित है। अंततः, केवल प्रेम और विश्वास ही हमें इससे बचा सकते हैं। सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्य मानव जीवन का अभिन्न अंग हैं। चाहे औद्योगीकरण हो, लोकतंत्र हो या आतंकवाद से लड़ना, आध्यात्मिक मूल्यों में विश्वास किए बिना हम मानव समाज की संरचना का पुनर्निर्माण नहीं कर पाएंगे।

संपादकीय

जो जीवन नहीं है जल

अक्सर कहा जाता है कि जल ही जीवन है। लेकिन यह जल यदि दूषित हो तो क्या इसे जीवन कहा जा सकता है? यूं तो देश के गांवों में महत्वाकांक्षी जल जीवन मिशन जोर-शोर से चलाया जाता रहा है। लेकिन यह बात परेशान करती है कि पेयजल का बड़ा हिस्सा प्रदूषित पाया गया है। लोग सेहत के लिये हानिकारक जल पीने को मजबूर हैं। फलतः इससे उत्पन्न बीमारियों की चुनौतियों का सामना करने को बाध्य होते हैं। यह हमारे नीति-नियंताओं की विफलता ही कही जाएगी कि देश के करोड़ों लोग आज भी स्वच्छ जल की उपलब्धता से वंचित हैं। सबसे ज्यादा चिंता की बात यह है कि देश के तमाम इलाकों में लिए गए दूषित पेयजल नमूनों के करीब दो तिहाई हिस्से को शुद्ध करने के प्रयास नहीं हुए हैं। जो इस बात को दर्शाता है कि आज भी देश के करोड़ों लोग स्वच्छ पेयजल हासिल नहीं कर पा रहे हैं। यह स्थिति हमारे विकास के मॉडल व तरक्की के दावों की तार्किकता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। यही वजह है कि दूषित जल से होने वाले रोगों का दायरा बढ़ रहा है। यह अच्छी बात है कि जोर-शोर से घर-घर नल से जल पहुंचाने की सार्थक पहल की गई। निस्संदेह, हर व्यक्ति का अधिकार है कि उसे अपने घर में स्वच्छ पेयजल मिले। इसी मकसद से साल 2019 में जल जीवन मिशन को सिरे चढ़ाया गया था। लेकिन इस योजना के सुरक्षित तरीके से संचालन और स्वच्छ जल आपूर्ति को लेकर सवाल खड़े होते रहे हैं। यह हकीकत है कि जब लोगों को स्वच्छ जल नहीं मिलता तो कई तरह के रोगों के पैदा होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। कहा भी जाता है कि हमारे अधिकांश रोग पेट से ही शुरू होते हैं। खासकर बच्चों व बुजुर्गों के लिये यह एक बेहद संवेदनशील मामला है। जिससे बचने के लिये स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करना बेहद जरूरी हो जाता है। देश में बार-बार स्वच्छ शहर का खिताब हासिल करने वाले मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में पिछले दिनों प्रदूषित पेयजल से होने वाली मौतों ने देश में खतरे की घंटी बजायी। घटना ने स्पष्ट संकेत दिया कि यदि इस दिशा में व्यापक स्तर पर प्रयास नहीं किए गए तो आने वाले समय में देश के सामने गंभीर स्वास्थ्य चुनौती पैदा हो सकती है। उल्लेखनीय है कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्रामीणों तक पहुंचाए जा रहे पेयजल की गुणवत्ता की परख के लिये पानी के सैंपल लिए जाते हैं। साथ ही स्वच्छ पेयजल उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए जवाबदेह लोगों के खिलाफ एक्शन भी लिया जाता है। यहां उल्लेखनीय है कि बीते साल जल जीवन मिशन के तहत तमाम राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों में पेयजल सैंपलों की जांच की गई। लेकिन चिंताजनक स्थिति यह है कि कुल नमूनों के छब्बीस प्रतिशत को ही शुद्ध करने के प्रयास हुए हैं। आखिर देश के किसी भी भाग में पेयजल के सैंपल लेने का क्या औचित्य रह जाता है, जब प्रदूषित जल को लेकर उपचारात्मक प्रयास न किए जाएं। सवाल केवल ग्रामीण इलाकों के लोगों को स्वच्छ जल उपलब्ध कराने का ही नहीं है, शहरी इलाकों में शुद्ध जल की उपलब्धता भी सुनिश्चित होनी चाहिए। गाहे-बगाहे देश के शहरी इलाकों में भी प्रदूषित जल पीने से बीमार होने की खबरें आती रहती हैं। लेकिन स्थानीय निकाय इस चुनौती को गंभीरता से नहीं लेते। संपन्न लोग तो आरओ तथा फिल्टर आदि वैकल्पिक व्यवस्था कर लेते हैं, लेकिन कमजोर वर्ग व सामान्य लोग दूषित पानी के उपयोग के लिये मजबूर होते हैं। स्वच्छ जल प्राप्त करना हर नागरिक का मौलिक व जीवन रक्षा का अधिकार जैसा है, जिसे गंभीरता से लेना चाहिए। इंदौर की घटना से सबक लेकर स्थानीय निकायों और प्रशासन को पेयजल व सीवर लाइन को सुरक्षित दूरी पर रखना सुनिश्चित करना चाहिए। जिन इलाकों में पेयजल पाइप लाइन को बिछे दशकों हो गए हैं, वहां उन्हें बदलने का काम युद्धस्तर पर किया जाना चाहिए। साथ ही रोजमर्रा की जरूरतों में काम आने वाले भूजल की गुणवत्ता सुधारने तथा घातक रसायनों से उसे मुक्त कराने की दिशा में गंभीर पहल की जाए।

दलगत राजनीति से मुक्त हो राष्ट्रपति पद

> "जब कोई व्यक्ति प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति जैसे पद पर पहुंच जाता है तो उसकी अगड़ी या पिछड़ी, पुरुष या महिला आदिवासी या वनवासी वाली कोई पहचान नहीं बचती। इस सब का लाभ उठाने की किसी भी कोशिश को जनतांत्रिक मूल्य और आदर्शों के अनुरूप नहीं माना जाना चाहिए।

देश का राष्ट्रपति देश का प्रथम नागरिक ही नहीं होता, देश के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति होता है। राष्ट्रपति को कैसे संबोधित किया जाये से लेकर राष्ट्रपति के साथ कैसा व्यवहार किया जाये जैसी बातें एक प्रोटोकॉल के अंतर्गत आती हैं, और अपेक्षा की जाती है कि कोई इसका उल्लंघन नहीं करेगा। हमारे राष्ट्रपति का सम्मान किसी व्यक्ति या पद का सम्मान मात्र नहीं है, वस्तुतः यह देश का सम्मान है, उस संविधान का सम्मान है, जिसके आधार पर हमारी समूची जनतांत्रिक व्यवस्था चलती है। इस पद की मर्यादा को देखते हुए कुछ ऐसी ही अपेक्षा उस व्यक्ति से भी की जाती है, जिसे देश इस पद पर बिठाता है। दलगत राजनीति से कहीं ऊपर होता है इस पद पर बैठा व्यक्ति–पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है और पूरे राष्ट्र को संरक्षण भी देता है।

आमतौर पर यह माना जाता है कि हमारा राष्ट्रपति विवादों से परे होगा। पिछले सात दशक से भी अधिक समय का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस पद पर बैठे व्यक्तियों ने कुल मिलाकर पद की गरिमा की रक्षा ही की है। ऐसे में जब किसी राष्ट्रपति के संदर्भ में विवादास्पद स्थितियां बनती हैं तो खेद भी होता है और आशंका भी होती है कि देश का यह सर्वोच्च पद विवादों के चलते अपनी गरिमा न खो दे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की हाल की बंगाल-यात्रा को लेकर जिस तरह का वातावरण बन रहा है, वह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता।

हम इस घटना को लेकर कोई टिप्पणी करें उससे पहले इस बात को रेखांकित किया जाना जरूरी है कि एक आदिवासी महिला का इस पद पर पहुंचना हम सबके लिए गौरव की बात है। वे पहली महिला नहीं हैं जो इस पद के लिए चुनी गयी हैं, पर एक आदिवासी महिला यदि अपनी योग्यता-क्षमता से देश की राष्ट्रपति बनती है तो महिलाओं अथवा आदिवासियों के एक ऊंचे मुकाम पर पहुंचने का ही उदाहरण नहीं है, यह हमारे जनतंत्र की परिपक्वता का भी एक गौरवशाली क्षण है। देश को इस पर गर्व होना चाहिए। हमें है इस बात का गर्व। इसलिए राष्ट्रपति, पद के अपमान को लेकर देश इतना संवेदनशील भी है। इस पद की गरिमा को कम करने की कोई भी घटना अथवा कोई भी कोशिश देश के जागरूक नागरिक को स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए।

अब बंगाल वाली घटना की बात। संथाल आदिवासियों की एक संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने के लिए राष्ट्रपति बंगाल गयी थीं। राष्ट्रपति जब भी किसी राज्य में जाते हैं, भले ही वह यात्रा सामाजिक हो अथवा सरकारी, तो उनके स्वागत का एक निश्चित तरीका होता है, जिसका पालन राज्य सरकार को करना होता है। इस प्रोटोकॉल में मुख्य रूप से यह बात शामिल है कि राज्य का राज्यपाल, मुख्यमंत्री अथवा कोई वरिष्ठ मंत्री स्वागत करने पहुंचता है। यह संभव है कभी किन्हीं कारणों से इस व्यवस्था का पूरा पालन न हो पाता हो, पर ऐसा होने का कोई उचित कारण होना-दिखना चाहिए। राष्ट्रपति मुर्मू की इस यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी स्वागत के लिए नहीं पहुंची थीं। उन्होंने 'पूर्व निर्धारित अन्य कार्यक्रम' और राष्ट्रपति की यात्रा की पूर्व सूचना न मिलने का हवाला देकर अपनी अनुपस्थिति का औचित्य ठहराया है। उनकी बात सही भी हो सकती है, पर ऐसे में वे अपने मंत्रिमंडल के किसी वरिष्ठ सहयोगी को वहां भेज कर अपना कर्तव्य निभा सकती थीं। मुख्यमंत्री की यह चूक हल्के से नहीं ली जानी चाहिए। वे चाहतीं तो चूक को स्वीकार करके विवाद की तल्खी कम कर सकती थीं। पता नहीं क्यों उन्होंने ऐसा करना जरूरी नहीं समझा। राष्ट्रपति के सम्मान को लेकर किसी भी प्रकार की चूक को स्वीकार करना उचित नहीं है। देश के सर्वोच्च पद पर बैठे व्यक्ति को समुचित सम्मान मिलना ही चाहिए।

बहरहाल, इस विवाद का एक और पहलू भी है, जो राष्ट्र की चिंता का कारण होना चाहिए। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपनी चूक का बचाव करने की कोशिश करते हुए राष्ट्रपति की इस यात्रा को राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित बताया है और यह भी कहा है कि राष्ट्रपति केंद्र में सत्तारूढ़ दल के हितों की दृष्टि से आदिवासियों के इस कार्यक्रम में पहुंची थीं। ममता बनर्जी को यह शिकायत भी है कि राष्ट्रपति बार-बार बंगाल क्यों आती हैं। निश्चित रूप से राष्ट्रपति से यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वह किसी राजनीतिक दल के हित को दृष्टि में रखकर कुछ काम करेंगी। पर इस आशय के आरोप भी हल्के में नहीं लगने चाहिए। राष्ट्रपति का सम्मान सर्वोपरि है, इसलिए राष्ट्रपति से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वह भी इस सम्मान की रक्षा के प्रति जागरूक रहेंगी। जिस तरह न्याय होना ही नहीं, होते हुए दिखना भी चाहिए, उसी तरह राष्ट्रपति को भी निष्पक्ष होकर काम करते हुए दिखना चाहिए। ऐसे में जब हम यह देखते हैं कि राष्ट्रपति सार्वजनिक मंच से राज्य के मुख्यमंत्री के व्यवहार की आलोचना कर रही हैं, तो थोड़ा अटपटा लगता है। उचित तो यह होता कि वह टेलीफोन से, या पत्र लिखकर ही सही, अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करतीं। राष्ट्रपति द्वारा खुले मंच से किसी राज्य सरकार या किसी मुख्यमंत्री की आलोचना करना कोई अच्छी परंपरा का उदाहरण नहीं है।

इस सारे विवाद का तीसरा पहलू भी है। देश के प्रधानमंत्री ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री की तीखी आलोचना करते हुए इसे राष्ट्रपति का ही नहीं, एक दलित महिला का, विशेष रूप से एक आदिवासी महिला का अपमान बताना ज़रूरी समझा है। यह सही है कि हमारी राष्ट्रपति दलित महिला हैं, और आदिवासी भी हैं, पर अब वह देश की सर्वोच्च नागरिक हैं, राष्ट्रपति हैं, उनकी और कोई भी पहचान इस पद से बड़ी नहीं हो सकती। एक परिपाटी सी चल पड़ी है हमारे यहां– सहानुभूति बटोरने की परंपरा। पिछड़े वर्ग से जुड़ा राजनेता अपने साथ हुए 'ग़लत बर्ताव' को पिछड़े वर्ग के अपमान के रूप में बताना ज़रूरी समझता है। स्वयं हमारे प्रधानमंत्री कई बार पिछड़े वर्ग के अपमान की दुहाई दे चुके हैं। चालीस सीटें ऐसी हैं जहां आदिवासियों का वोट चुनाव-परिणाम को प्रभावित कर सकता है। ऐसे में यदि पश्चिम बंगाल के आदिवासी-आयोजन में राष्ट्रपति की उपस्थिति और प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति के अपमान को आदिवासियों का अपमान बताया जाता है तो चुनावी राजनीति पर इसके निहितार्थ समझना मुश्किल नहीं होना चाहिए।

जब कोई व्यक्ति प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति जैसे पद पर पहुंच जाता है तो उसकी अगड़ी या पिछड़ी, पुरुष या महिला आदिवासी या वनवासी वाली कोई पहचान नहीं बचती। इस सब का लाभ उठाने की किसी भी कोशिश को जनतांत्रिक मूल्य और आदर्शों के अनुरूप नहीं माना जाना चाहिए। पश्चिम बंगाल की इस हाल की घटना में देश के राष्ट्रपति के साथ कथित अनुचित व्यवहार हुआ है, आदिवासी महिला के साथ नहीं। हर बात को राजनीतिक लाभ उठाने का अवसर बनाने की प्रवृत्ति घटिया राजनीति का उदाहरण है। आवश्यकता इस घटियापन को उजागर करने, इससे उबरने की है।

प्रेरणा

सच के लिए जीवन समर्पित करने वाली अन्ना पोलिटकोव्स्काया की कहानी

बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में दुनिया के कई हिस्सों में राजनीतिक उथल-पुथल और संघर्ष की स्थिति बनी हुई थी। इन्हीं घटनाओं के बीच रूस के चेचन्या क्षेत्र में भी एक भयंकर सशस्त्र संघर्ष चल रहा था। यह संघर्ष केवल राजनीतिक सत्ता या क्षेत्रीय नियंत्रण का प्रश्न नहीं था, बल्कि इसके बीच फंसे हजारों आम नागरिकों के जीवन की त्रासदी भी था। गांव उजड़ रहे थे, घरों पर गोलियां चल रही थीं, और कई लोग बिना किसी स्पष्ट कारण के अचानक गायब हो रहे थे। उस समय दुनिया के सामने इस संघर्ष की वास्तविक तस्वीर बहुत कम आ पा रही थी, क्योंकि वहां जाना और सच्चाई सामने लाना बेहद जोखिम भरा था। ऐसे भय और असुरक्षा के माहौल में एक पत्रकार ने यह तय किया कि वह इन घटनाओं को अनदेखा नहीं करेगी। वह पत्रकार थीं Anna Politkovskaya, जिन्होंने अपने साहस और ईमानदारी से पत्रकारिता के इतिहास में एक अलग पहचान बनाई। चेचन्या में उस समय का वातावरण इतना खतरनाक था कि कई पत्रकार और मानवाधिकार कार्यकर्ता वहां जाने से बचते थे। अक्सर खबरें केवल आधिकारिक बयानों के आधार पर ही प्रकाशित हो जाती थीं, जिससे वहां के आम लोगों की वास्तविक पीड़ा दुनिया के सामने नहीं आ पाती थी। लेकिन अन्ना पोलिटकोव्स्काया का मानना था कि पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सत्ता की बातों को दोहराना नहीं, बल्कि उन लोगों की आवाज बनना भी है जिनकी आवाज दबा दी जाती है। इसी विचार के साथ उन्होंने चेचन्या जाने का निर्णय लिया और वहां के गांवों, शरणार्थी शिविरों तथा संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करना शुरू किया।

उनकी यात्राएं किसी औपचारिक कार्यक्रम का हिस्सा नहीं थीं। वे सीधे गांवों में पहुंचती थीं, लोगों से बातचीत करती थीं और उनकी कहानियां ध्यान से सुनती थीं। कई बार वे घंटों तक किसी परिवार के साथ बैठकर उनकी पीड़ा को समझने की कोशिश करती थीं। अनेक परिवारों ने उन्हें बताया कि उनके बेटे, पति या भाई अचानक रात के समय उठा लिए गए और उसके बाद उनका कोई पता नहीं चला। कुछ लोग बताते थे कि सेना की कार्रवाई के दौरान उन्हें हिरासत में लिया गया, लेकिन बाद में उनके बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई। ऐसी कहानियां केवल एक-दो परिवारों तक सीमित नहीं थीं, बल्कि पूरे क्षेत्र में इसी तरह की घटनाएं सुनने को मिलती थीं। अन्ना इन घटनाओं को केवल सुनकर भूल नहीं जाती थीं। वे हर तथ्य को सावधानी से लिखती थीं, लोगों के बयान दर्ज करती थीं और फिर उन्हें अपने लेखों के माध्यम से प्रकाशित करती थीं। उनके लेखों में केवल घटनाओं का विवरण नहीं होता था, बल्कि उनमें उन लोगों का दर्द और संघर्ष भी झलकता था जिनके जीवन को युद्ध ने बदल दिया था। यही कारण था कि उनके लेख पढ़ने वाले लोग केवल समाचार नहीं पढ़ते थे, बल्कि उन्हें ऐसा लगता था जैसे वे किसी परिवार की वास्तविक कहानी से रूबरू हो रहे हों। उनकी रिपोर्टिंग धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित करने लगी। मानवाधिकार संगठनों और वैश्विक मीडिया ने चेचन्या की स्थिति पर सवाल उठाने शुरू किए। कई संगठनों ने वहां हो रहे संभावित मानवाधिकार उल्लंघनों की जांच की मांग की। इस तरह अन्ना के लेखों ने एक ऐसे मुद्दे को दुनिया के सामने ला दिया, जिसे लंबे समय तक अनदेखा किया जा रहा था। हालांकि यह कार्य आसान नहीं था, क्योंकि सच्चाई सामने लाने का मतलब था शक्तिशाली लोगों के खिलाफ खड़ा होना। अन्ना को अपने काम के कारण लगातार धमकियों का सामना करना पड़ा। कई बार उन्हें चेतावनी दी गई कि वे चेचन्या के बारे में लिखना बंद कर दें। कुछ लोगों ने उन्हें डराने की कोशिश की, तो कुछ ने उन्हें बदनाम करने की भी कोशिश की। लेकिन उन्होंने इन सबके बावजूद अपने काम को जारी रखा। उनका मानना था कि यदि पत्रकार डरकर चुप हो जाए, तो समाज में अन्याय को उजागर करने वाला कोई नहीं बचेगा। वे अक्सर कहती थीं कि सच्चाई को दबाने से वह समाप्त नहीं होती, बल्कि और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। उनकी पत्रकारिता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह था कि वे हर कहानी को मानवीय दृष्टि से देखती थीं। वे यह समझने की कोशिश करती थीं कि संघर्ष का प्रभाव आम लोगों के जीवन पर किस प्रकार पड़ता है। उनके लेखों में बच्चों के भय, महिलाओं के संघर्ष और बुजुर्गों की असहायता की झलक मिलती थी। वे यह दिखाती थीं कि युद्ध केवल सैनिकों के बीच नहीं होता, बल्कि इसका सबसे गहरा असर उन लोगों पर पड़ता है जो किसी भी पक्ष से जुड़े नहीं होते। समय के साथ अन्ना पोलिटकोव्स्काया का नाम निडर पत्रकारिता का पर्याय बन गया। दुनिया भर में उनके काम की सराहना होने लगी और कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनके प्रयासों की चर्चा होने लगी। लेकिन उनके लिए यह सब केवल एक परिणाम था, लक्ष्य नहीं। उनका असली उद्देश्य था कि दुनिया चेचन्या के लोगों की वास्तविक स्थिति को समझे और वहां हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाए।

उनकी कहानी यह भी बताती है कि एक पत्रकार की भूमिका केवल खबरें लिखने तक सीमित नहीं होती। पत्रकार समाज के इतिहास को दर्ज करने वाला एक साक्षी भी होता है। जब वह ईमानदारी और साहस के साथ काम करता है, तो उसकी लिखी हुई बातें आने वाली पीढ़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन जाती हैं। अन्ना की रिपोर्टिंग भी इसी प्रकार का एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन गई, जिसने चेचन्या के संघर्ष को मानवता के दृष्टिकोण से समझने में मदद की। आज भी जब पत्रकारिता की नैतिकता, साहस और जिम्मेदारी की बात होती है, तो अन्ना पोलिटकोव्स्काया का नाम प्रेरणा के रूप में लिया जाता है। उनका जीवन यह दिखाता है कि सच बोलना और अन्याय के खिलाफ खड़ा होना कभी आसान नहीं होता, लेकिन यही वह मार्ग है जो समाज को अधिक न्यायपूर्ण और मानवीय बनाता है। उन्होंने अपने साहस से यह साबित किया कि एक व्यक्ति की आवाज भी बहुत प्रभावशाली हो सकती है, यदि उसमें सच्चाई और ईमानदारी हो। उनकी विरासत केवल पत्रकारिता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय की लड़ाई से भी जुड़ी हुई है। अन्ना पोलिटकोव्स्काया की कहानी हमें यह सिखाती है कि जब कोई व्यक्ति सच्चाई के लिए खड़ा होता है, तो उसकी आवाज समय और सीमाओं से परे जाकर लोगों के दिलों तक पहुंचती है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि सत्य की खोज और अन्याय के खिलाफ संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि यह समाज को बेहतर और अधिक जागरूक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होता है।

सामाजिक समरसता को समर्पित संघ, हमेशा समाज को एक सूत्र में बांधने का किया काम

भारत की संस्कृति का मूल तत्व 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' का आदर्श रहा है। यहां जाति, भाषा और प्रांत की विविधता होते हुए भी एक गहरी एकात्मता रही है। बाहरी आक्रमण और सामाजिक कुरीतियों के बावजूद भारत की एकात्मता आज तक कमजोर नहीं हुई, वह एक जैसी बनी हुई है। समाज को जाति-पांति, ऊंच-नीच के मानसिक बंधनों से मुक्त करने और हिंदू समाज को एक कर संगठित करने के लिए डा. केशव बलिराम हेडगेवार ने 1925 में आरएसएस की स्थापना की।

उस समय भारत पराधीनता, सामाजिक भेदभाव, ब्रिटिश शासन, ईसाई मिशनरी और मुस्लिम लीग के षड्यंत्रों से संघर्ष कर रहा था। बाहरी आक्रांता चाहे मुगल हों या अंग्रेज, उन्होंने न केवल भारत का आर्थिक शोषण किया, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चेतना पर आघात का भी प्रयास किया, जिसमें वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाए। ऐसे कठिन समय में संघ ने यह लक्ष्य रखा कि भारत को केवल राजनीतिक आजादी नहीं चाहिए, बल्कि उसे सांस्कृतिक, सामाजिक, वैचारिक और आध्यात्मिक रूप से भी स्वतंत्र होना होगा। संघ का उद्देश्य स्पष्ट था-समाज को संगठित कर राष्ट्र को सशक्त बनाना।'

आरएसएस की स्थापना के बाद धीरे-धीरे इसकी शाखाएं पूरे देश में फैलने लगीं। संघ की कार्यप्रणाली का मूल आधार था-शाखा, जिसमें स्वयंसेवक प्रतिदिन खेल, योग, देशभक्ति गीत और अनुशासनात्मक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का विकास करते हैं। संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने हाल में कहा, 'संघ केवल संगठन नहीं, बल्कि एक विचारधारा है, जो समाज को जोड़ने और सशक्त बनाने के लिए काम कर रही है।' संघ तीन प्रमुख बातों पर केंद्रित रहता है-आत्मविश्लेषण और सुधार, समाज के समर्थन को स्वीकार करना तथा राष्ट्र सेवा के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करना।

संघ की शाखाओं में जब स्वयंसेवक पंक्ति में खड़े होते हैं, तो वहां किसी की जाति, वर्ण या आर्थिक स्थिति नहीं पूछी जाती। संघ की शाखा स्वयं सामाजिक-समरसता का जीवंत प्रतीक है। आज जब राजनीतिक दलों द्वारा नागरिकों को मतदाताओं के रूप में और सामाजिक जाति समूहों को वोट बैंक के रूप में देखा जा रहा है और इनके आधार पर समाज के कृत्रिम विभाजन का प्रयास किया जा रहा है, तब संघ का सामाजिक समरसता का प्रयास अधिक आवश्यक, अधिक उपयोगी और अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है।

आज सामाजिक समरसता समाज की अपरिहार्य आवश्यकता है। यदि भारत को विश्वगुरु बनाना है तो जाति, भाषा और क्षेत्र की दीवारों को गिराना होगा। संघ का दृष्टिकोण स्पष्ट है, 'हम सब एक हैं और हमारी शक्ति हमारी एकता में है।' डा. हेडगेवार ने मंदिर प्रवेश आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की, ताकि हर जाति के लोग एक ही देवालय में पूजा कर सकें। 1930-40 के दशक से ही दलित और वनवासी समाज को संघ की शाखाओं में बराबरी से स्थान मिला है। संघ ने 1925 में भेदभाव मिटाने की जो नींव रखी, उसे वह शिक्षा-सेवा के माध्यम से व्यवहार में उतार रहा है और भविष्य में एक समरस, संगठित और सशक्त भारत बनाने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है।

वैश्विक स्तर पर भी भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर प्रवासी भारतीयों के बीच संघ शाखाएं और गतिविधियां चलाकर भारतीयता को जीवित रख रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्षों का इतिहास केवल एक संगठन की कथा नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रीय चेतना की गाथा है। इसने राष्ट्रीय चेतना को आचरण में उतारा, समाज को समरसता की ओर प्रेरित किया और करोड़ों स्वयंसेवकों ने समाज में सेवा, अनुशासन और समर्पण की भावना जगाई। आज संघ का योगदान और प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक है। संघ का यह शताब्दी वर्ष इसका प्रतीक है कि यदि संगठन अनुशासन, सेवा और समरसता पर आधारित हो तो वह न केवल राष्ट्र को नई दिशा दे सकता है, बल्कि समाज को भी एक सूत्र में बांध सकता है। आज जब समाज को विभिन्न मत, पंथ, विचारधाराएं और राजनीतिक स्वार्थ के लिए बांटने की कोशिश की जा रही हैं, तब संघ का संदेश और प्रासंगिक हो जाता है। यदि हमें सशक्त और अखंड भारत बनाना है तो जाति, भाषा और क्षेत्र की दीवारें गिरानी होंगी। हमें अपने समाज को अपने परिवार की तरह मानना, समझना और उसके अनुरूप व्यवहार करना होगा। हम सब एक ही राष्ट्र के अंग हैं और हमारी शक्ति हमारी एकता में है। संघ का पथ कठिन अवश्य है, परंतु प्रकाशमान है। जिस दिन भारत का हर नागरिक यह अनुभव कर लेगा कि उसका सुख-दुख, उसका मान-सम्मान पूरे समाज से जुड़ा हुआ है और पूरा भारतीय समाज उसका वृहद परिवार है, उसी दिन सच्ची सामाजिक समरसता स्थापित होगी। भारत को अखंड, सशक्त और समरस बनाने का यह अभियान केवल संघ का नहीं, बल्कि हम सबका कर्तव्य है। संघ ने भारतीय समाज को एकजुट करने, सेवा की भावना जगाने और राष्ट्रभक्ति की अलख जलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे सामाजिक समरसता हो, शिक्षा हो, सेवा कार्य हों या राष्ट्र की नीतियां, हर क्षेत्र में इसका योगदान स्पष्ट है। संघ के प्रयास हमें यह संदेश देते हैं कि समरस समाज ही सशक्त राष्ट्र का आधार है। यही भारत के उज्ज्वल भविष्य की कुंजी है।

अभियान

अनवरत अभिषेक का रहस्य: बेंगलुरु के प्राचीन शिवधाम में नंदी के मुख से बहती दिव्य जलधारा

भारत को सदियों से आस्था, अध्यात्म और चमत्कारों की भूमि माना जाता है। यहां के मंदिर केवल पूजा-अर्चना के स्थान नहीं होते, बल्कि वे इतिहास, संस्कृति और रहस्यों की जीवित धरोहर भी हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में भगवान शिव के हजारों मंदिर मौजूद हैं, जहां प्रतिदिन भक्त श्रद्धा से जल चढ़ाकर शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। शिवभक्ति की यह परंपरा भारत की धार्मिक संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। लेकिन देश में एक ऐसा अनोखा शिव मंदिर भी है जहां भगवान शिव का जलाभिषेक किसी मनुष्य द्वारा नहीं, बल्कि स्वयं नंदी के मुख से होता है। यह आश्चर्यजनक दृश्य कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में देखने को मिलता है, जहां एक प्राचीन मंदिर में सदियों से नंदी की प्रतिमा के मुख से जलधारा निकलती रहती है और वह सीधे शिवलिंग पर गिरकर भगवान का अभिषेक करती रहती है। यह घटना केवल श्रद्धालुओं के लिए ही नहीं, बल्कि शोधकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए भी जिज्ञासा का विषय बनी हुई है।

यह अद्भुत स्थल बेंगलुरु के मल्लेश्वरम क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध Kadu Malleshwara Temple से जुड़ा हुआ है। यह मंदिर दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण शिव मंदिरों में गिना जाता है और इसकी प्राचीनता इसे और अधिक विशेष बनाती है। इतिहासकारों के अनुसार यह मंदिर लगभग चार सौ वर्ष पुराना है और इसका निर्माण सत्रहवीं शताब्दी के दौरान हुआ था। कहा जाता है कि इसका निर्माण मराठा शासक वेंकोजी ने करवाया था, जो महान योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के भाई थे। उस समय दक्षिण भारत में मराठा और द्रविड़ स्थापत्य शैलियों का प्रभाव था, जिसका सुंदर मिश्रण इस मंदिर की वास्तुकला में देखने को मिलता है। मंदिर का विशाल प्रांगण, पत्थरों से बनी संरचना और पारंपरिक शैली इसे देखने वालों को प्राचीन भारतीय वास्तुकला की भव्यता का अनुभव कराती है।

इस मंदिर की विशेषता केवल इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या स्थापत्य कला नहीं है, बल्कि इसके पास स्थित वह पवित्र स्थान है जो नंदी के मुख से निकलने वाली जलधारा के कारण प्रसिद्ध है। मंदिर के निकट स्थित यह पवित्र स्थान Dakshinamukha Nandi Tirtha Kalyani के नाम से जाना जाता है। यहां नंदी महाराज की एक पत्थर की प्रतिमा स्थापित है, जिसका मुख दक्षिण दिशा की ओर है। इसी प्रतिमा के मुख से लगातार स्वच्छ और ठंडा पानी निकलता रहता है। यह जल एक पतली धारा के रूप में बहता हुआ सीधे शिवलिंग पर गिरता है और भगवान शिव का निरंतर अभिषेक करता रहता है। यह दृश्य अत्यंत अद्भुत और मन को श्रद्धा से भर देने वाला होता है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है जैसे नंदी स्वयं अपने आराध्य भगवान शिव की सेवा में निरंतर लगे हुए हों।

सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि इस जलधारा का स्रोत आज तक स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं हो सका है। सदियों से पानी इसी प्रकार बहता आ रहा है और कभी रुकता नहीं है। कई वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने इस घटना को समझने के लिए अध्ययन भी किया, लेकिन अभी तक कोई निश्चित निष्कर्ष सामने नहीं आ पाया है। कुछ विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह जल संभवतः किसी भूमिगत झरने या जलस्रोत से जुड़ा हो सकता है, जो प्राचीन जल संरचना के माध्यम से नंदी की प्रतिमा तक पहुंचता है। दक्षिण भारत के कई पुराने मंदिरों में वर्षा जल संचयन और भूमिगत जल प्रबंधन की अत्यंत विकसित प्रणालियां हुआ करती थीं, इसलिए यह भी संभव है कि यह जलधारा उसी तकनीक का हिस्सा हो। हालांकि इन संभावनाओं के बावजूद यह रहस्य पूरी तरह सुलझ नहीं पाया है।

जहां विज्ञान इस रहस्य को समझने की कोशिश करता है, वहीं श्रद्धालुओं के लिए यह घटना भगवान शिव की दिव्य लीला का प्रतीक है। भक्तों का विश्वास है कि नंदी भगवान शिव के सबसे प्रिय भक्त हैं और उनके मुख से बहने वाला यह जल उनके अटूट समर्पण और सेवा का प्रतीक है। कई लोग मानते हैं कि इस पवित्र स्थान पर सच्चे मन से की गई प्रार्थना अवश्य फल देती है। यही कारण है कि दूर-दूर से लोग यहां दर्शन करने के लिए आते हैं और इस अद्भुत दृश्य को देखकर अपनी श्रद्धा और विश्वास को और मजबूत महसूस करते हैं।

मंदिर की धार्मिक परंपराएं भी यहां के वातावरण को विशेष बनाती हैं। साल भर यहां पूजा और अनुष्ठान होते रहते हैं, लेकिन महाशिवरात्रि के अवसर पर यहां का दृश्य अत्यंत भव्य और उत्साहपूर्ण हो जाता है। इस पावन पर्व के दौरान मंदिर को सुंदर फूलों और रोशनी से सजाया जाता है। श्रद्धालु पूरी रात भगवान शिव की आराधना करते हैं और विशेष रुद्राभिषेक तथा महापूजा का आयोजन किया जाता है। भजन-कीर्तन और धार्मिक मंत्रोच्चार से पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठता है।

महाशिवरात्रि के समय यहां एक प्रसिद्ध उत्सव भी आयोजित होता है, जिसे स्थानीय लोग मूंगफली मेला कहते हैं। यह मेला लगभग पंद्रह दिनों तक चलता है और इसमें हजारों श्रद्धालु तथा पर्यटक शामिल होते हैं। इस दौरान मंदिर परिसर के आसपास का क्षेत्र एक बड़े सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सव में बदल जाता है। लोग भगवान शिव के दर्शन के साथ-साथ इस मेले का आनंद भी लेते हैं। स्थानीय व्यापारी और कारीगर भी इसमें भाग लेते हैं, जिससे यह मेला धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक मिलन का भी प्रतीक बन जाता है।

बेंगलुरु आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए इस मंदिर तक पहुंचना काफी आसान है। यदि कोई हवाई मार्ग से यात्रा करता है, तो शहर का केंपेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है, जहां से टैक्सी और बस के माध्यम से मंदिर तक पहुंचा जा सकता है। रेल मार्ग से आने वाले यात्रियों के लिए बेंगलुरु सिटी रेलवे स्टेशन सबसे सुविधाजनक स्थान है। वहीं सड़क मार्ग से आने वाले लोगों के लिए शहर की मेट्रो और बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं, जो मंदिर तक पहुंचने में सहायक होती हैं।

मंदिर के आसपास ठहरने की भी अच्छी व्यवस्था है। मल्लेश्वरम और आसपास के इलाकों में कई धर्मशालाएं, बजट होटल और मध्यम श्रेणी के होटल मौजूद हैं, जहां श्रद्धालु और पर्यटक आसानी से रुक सकते हैं। इसके अलावा बेंगलुरु एक आधुनिक महानगर होने के कारण यहां सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिससे यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती। कुल मिलाकर यह स्थान केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं बल्कि आस्था, इतिहास और रहस्य का अद्भुत संगम है। नंदी के मुख से बहती यह निरंतर जलधारा लोगों को यह अनुभव कराती है कि भारत की आध्यात्मिक परंपराएं कितनी गहरी और रहस्यमयी हैं। सदियों से चलता आ रहा यह अनोखा अभिषेक भक्तों के विश्वास को और मजबूत बनाता है और साथ ही यह संकेत भी देता है कि हमारे प्राचीन मंदिरों में प्रकृति और अध्यात्म के बीच एक गहरा संबंध छिपा हुआ है। यही कारण है कि यह स्थान आज भी लाखों लोगों के लिए श्रद्धा और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है और आने वाले समय में भी यह रहस्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता रहेगा।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

राज्य की आईटीआई में मोटर मैकेनिक ट्रेड में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवाओं को इलेक्ट्रिक व्हीकल्स से जुड़ा प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जाएगा

- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों को 40 इलेक्ट्रिक कारों का वितरण किया
- श्रम एवं कौशल विकास मंत्री श्री कुंवरजीभाई बावळिया की प्रेरक उपस्थिति
- मुख्यमंत्री ने गांधीनगर में निर्माण और संगठित क्षेत्र के श्रमयोगियों को घर के आसपास ही प्राथमिक स्वास्थ्य उपचार उपलब्ध कराने के लिए 50 धन्वंतरि आरोग्य रथ और 6 मोबाइल मेडिकल वैन का लोकार्पण किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : राज्य के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) में मोटर मैकेनिक ट्रेड के 8000 से अधिक युवा प्रशिक्षु अब इलेक्ट्रिक व्हीकल से जुड़ी नई टेक्नोलॉजी का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।
मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस उद्देश्य से श्रम एवं कौशल विकास मंत्री श्री कुंवरजीभाई बावळिया की उपस्थिति में गुरुवार को गांधीनगर में विभिन्न जिलों की आईटीआई के लिए 40 इलेक्ट्रिक कारों का वितरण किया।
इलेक्ट्रिक वाहनों के बढ़ते दायरे और इस क्षेत्र में खुलने वाले रोजगार के अपार अवसरों को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग ने सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों को इसके अनुरूप आधुनिक टेक्नोलॉजी से सुसज्जित करने की प्रक्रिया शुरू की है। ऑटोमोबाइल इंडस्ट्रीज में इलेक्ट्रिक वाहन सेक्टर में बैटरी टेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रिक पावरट्रेन और एम्बेडेड सॉफ्टवेयर के विशेषज्ञों की मांग भी लगातार बढ़ रही है।
इस संदर्भ में, राज्य सरकार ने ऑटोमोबाइल सेक्टर के व्यवसायों के लिए आईटीआई को सिलेबस आधारित 40 इलेक्ट्रिक कार उपलब्ध कराकर प्रशिक्षुओं को नवीनतम टेक्नोलॉजी से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करने का लक्ष्य रखा है, ताकि उद्योगों को कुशल मानवबल उपलब्ध हो सके।
सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु इलेक्ट्रिक वाहन और उससे जुड़े पेशे के प्रायोगिक प्रशिक्षण में सक्षम बनकर आत्मनिर्भरता हासिल कर सकें, इसके लिए नवीनतम टेक्नोलॉजी के अनुरूप प्रैक्टिकल प्रशिक्षण उपलब्ध कराने में ये 40 इलेक्ट्रिक कारें उपयोगी साबित होंगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इन 40 ईवी कारों के अलावा 50 धन्वंतरि आरोग्य रथों और 6 मोबाइल मेडिकल वैन का भी लोकार्पण किया।
निर्माण श्रमिकों और संस्थाओं के श्रमयोगियों और उनके परिवारजनों को उनके घर के आसपास ही प्राथमिक चिकित्सा उपचार मिल सके, गंभीर रोगों से बचाव हो सके और उनका स्वास्थ्य बना रहे, इस उद्देश्य से इन धन्वंतरि आरोग्य रथों में बुखार, दस्त, उल्टी और चर्म रोग जैसे साधारण रोगों सहित प्राथमिक चोटों का उपचार तथा पेशाब, खून, शुगर और मलेरिया आदि का लेबोरेटरी टेस्ट किया जाता है।
इतना ही नहीं, बच्चों बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान प्राथमिक उपचार देने के साथ-साथ विभिन्न निदान स्थल पर ही करके आवश्यकतानुसार दवाइयां निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।
गुजरात भवन और अन्य निर्माण श्रमयोगी कल्याण बोर्ड द्वारा राज्य के सभी जिलों में 154 धन्वंतरि आरोग्य रथ और गुजरात श्रमयोगी कल्याण बोर्ड द्वारा 25 मोबाइल मेडिकल वैन सेवारत हैं।
अब, नए लोकार्पित हुए 50 धन्वंतरि आरोग्य रथों और 6 मोबाइल मेडिकल वैन के साथ राज्य के 34 जिलों में कुल 206 धन्वंतरि आरोग्य रथ और 31 मोबाइल मेडिकल वैन श्रमिकों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए कार्यरत किए गए हैं।
इस लोकार्पण अवसर पर श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग के सचिव श्री लोचन सेहरा, रोजगार और प्रशिक्षण निदेशक श्री नितिन सांगवान, श्रम आयुक्त श्री कमलेश डी. लाखाणी सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

मंडल रेलवे अस्पताल, भावनगर में विश्व किडनी दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

(जीएनएस)। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन एवं मंडल रेलवे अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. मनोज कुमार की देखरेख में आज मंडल रेलवे अस्पताल, भावनगर में विश्व किडनी दिवस के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किडनी से संबंधित रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाना, उनके प्रारंभिक लक्षणों की पहचान करना तथा समय पर उपचार के महत्व को समझाना था।
इस अवसर पर अस्पताल के कर्मचारियों एवं मरीजों को किडनी स्वास्थ्य से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गईं। कार्यक्रम के अंतर्गत किडनी रोगों की

रोकथाम, समय पर जांच और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के बारे में विस्तार से बताया गया।
कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नर्सिंग अधीक्षक (BVP) श्री श्रवणसिंह राजपुरोहित द्वारा दिया गया जागरूकता व्याख्यान रहा। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि किडनी हमारे शरीर का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, जो रक्त को शुद्ध करने, शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने तथा पानी और खनिजों के संतुलन को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाती है।
उन्होंने किडनी रोगों के प्रमुख कारणों के रूप में मधुमेह, उच्च रक्तचाप, असंतुलित आहार, धूम्रपान, अत्यधिक दर्दनिवारक दवाओं का सेवन तथा अस्वस्थ जीवनशैली को जिम्मेदार बताया। साथ ही उन्होंने किडनी रोगों के प्रारंभिक लक्षणों जैसे शरीर में सूजन, अत्यधिक थकान, पेशाब में परिवर्तन, भूख में कमी तथा कमजोरी आदि के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी।
श्री राजपुरोहित ने किडनी को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पीने, संतुलित एवं पौष्टिक आहार लेने, नियमित व्यायाम करने, रक्तचाप और मधुमेह को नियंत्रित रखने तथा समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि किडनी रोगों की समय पर पहचान और उपचार से गंभीर जटिलताओं से बचा जा सकता है।
कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी कर्मचारियों और मरीजों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा किडनी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया गया।

"भावनगर मंडल के कर्मचारियों ने दिखाई ईमानदारी : ट्रेन में छूटा महिला यात्री का आईफोन सुरक्षित लौटाया"

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के कर्मचारियों ने अपनी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए ट्रेन में छूटा एक यात्री का मोबाइल फोन सुरक्षित रूप से वापस लौटाकर सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।
भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि दिनांक 10 मार्च 2026 को गाड़ी संख्या 22963 बांद्रा–भावनगर साप्ताहिक सुपरफास्ट एक्सप्रेस के कोच संख्या B5 में यात्रा कर रही श्रीमती सुरेखाबेन (उम्र 67 वर्ष) अपना आईफोन ट्रेन में ही भूल गई थीं। यह मोबाइल फोन ट्रेन में

ड्यूटी पर कार्यरत लिनेन सुपरवाइजर श्री शैलेश बारिया को मिला। उन्होंने अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए मोबाइल को सुरक्षित रखा। इसके बाद दिनांक 11 मार्च 2026 (बुधवार) को गाड़ी संख्या 12972 भावनगर–बांद्रा एक्सप्रेस में ट्रेन कैप्टन श्री विजय कुमार पंड्या (CTI, BVC) की उपस्थिति में उक्त मोबाइल फोन संबंधित यात्री को सकुशल लौटा दिया गया।
इस सराहनीय कार्य के लिए मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने संबंधित कर्मचारियों की ईमानदारी की प्रशंसा करते हुए उन्हें भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट कार्य करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

सफाले रेलवे स्टेशन पर गाड़ी संख्या 19016 पोरबंदर दादर सौराष्ट्र एक्सप्रेस के समय में आंशिक परिवर्तन

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा रेलगाड़ियों की समयपालन (पंक्चुअलिटी) बनाए रखने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए गाड़ी संख्या 19016 पोरबंदर–दादर सौराष्ट्र एक्सप्रेस के सफाले रेलवे स्टेशन पर आगमन एवं प्रस्थान समय में आंशिक परिवर्तन किया गया है।
- वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार यह संशोधित समय दिनांक 15 मार्च 2026 से चलने वाली ट्रेन से प्रभावी होगा। संशोधित विवरण निम्नानुसार है—
- गाड़ी संख्या 19016 पोरबंदर–दादर सौराष्ट्र एक्सप्रेस
- सफाले स्टेशन पर पूर्व समय (आगमन/प्रस्थान): 17:13 / 17:15 बजे
- संशोधित समय (आगमन/प्रस्थान): 17:23 / 17:25 बजे
- अर्थात् उक्त ट्रेन अब सफाले रेलवे स्टेशन पर पूर्व निर्धारित समय से 10 मिनट बाद पहुंचेगी और प्रस्थान करेगी।

यह भी सूचित किया जाता है कि सफाले स्टेशन के अतिरिक्त अन्य किसी भी स्टेशन के समय में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

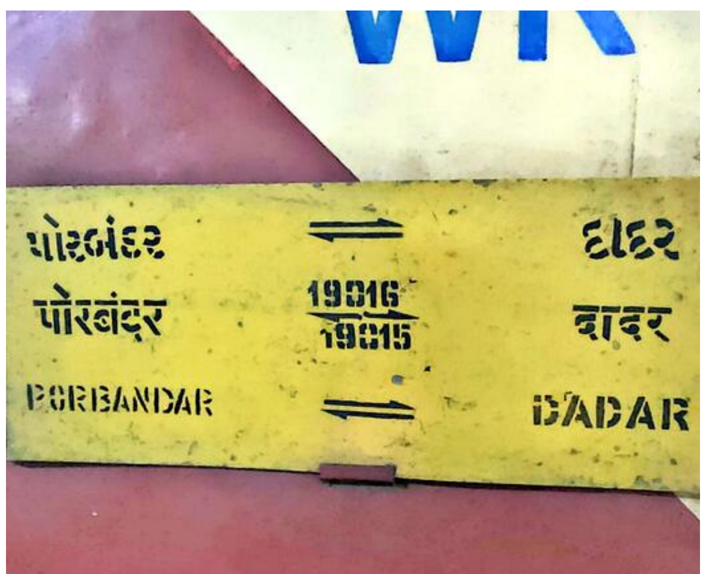

पश्चिम रेलवे यात्रियों से अनुरोध करता है कि वे अपनी यात्रा की योजना बनाते समय उपरोक्त संशोधित समय का ध्यान रखें।

गुजरात की 4 महानगर पालिकाओं में बनेंगे 'नमो स्वदेशी अर्बन मॉल', स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री के लिए उत्पादकों को मिलेगा स्थायी प्लेटफॉर्म

- गुजरात शहरी आजीविका मिशन के अंतर्गत अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा और राजकोट में एक-एक 'नमो स्वदेशी अर्बन मॉल' बनाया जाएगा
- स्थानीय कारीगरों, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं और फेरीवालों को स्वदेशी उत्पादों की बिक्री के लिए मिलेगा आधुनिक बाजार

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' और 'हर घर स्वदेशी' जैसे अभियान शुरू किए हैं ताकि देश का प्रत्येक नागरिक स्वदेशी वस्तुओं को अपनाए और 2047 तक विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने में अपना योगदान दे सके। इस अभियान के तहत मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात सरकार ने शहरी क्षेत्रों में स्थानीय कारीगरों और छोटे उद्यमियों को एक मंच प्रदान करने के लिए विभिन्न पहलें शुरू की हैं। गुजरात में स्वदेशी मेलों के सफल आयोजन के बाद, अब अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा और राजकोट सहित 4 महानगर पालिकाओं में 'नमो स्वदेशी अर्बन मॉल' बनाए जाएंगे। नमो स्वदेशी अर्बन मॉल : स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री के लिए उत्पादकों को मिलेगा एक स्थायी प्लेटफॉर्म शहरी विकास और शहरी गृह

निर्माण विभाग के तहत गुजरात शहरी आजीविका मिशन स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए 'नमो स्वदेशी अर्बन मॉल' योजना क्रियान्वित कर रहा है। इस योजना का उद्देश्य महानगर पालिकाओं में स्वदेशी उत्पादों की बिक्री के लिए स्थायी और आधुनिक बाजार व्यवस्था खड़ी करना है, ताकि नागरिकों को स्वदेशी उत्पाद खरीदने के लिए प्रोत्साहन मिल सके।
उल्लेखनीय है कि शहरी विकास वर्ष 2025-26 के दौरान राज्य की 16 महानगर पालिकाओं में प्लास्टिक फ्री 'स्वदेशी फेस्टिवल' के अंतर्गत स्वदेशी मेलों का आयोजन किया गया था, जिसमें स्थानीय कारीगरों, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं, फेरीवालों और छोटे व्यापारियों को अपने उत्पाद प्रदर्शित करने और बेचने का अवसर मिला था। अब, स्वदेशी उत्पादों को व्यापक और स्थायी बाजार उपलब्ध कराने के लिए अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा और राजकोट में स्थायी 'नमो स्वदेशी अर्बन मॉल' शुरू किए जाएंगे। ये मॉल स्थानीय कारीगरों, महिला स्वयं सहायता समूहों, फेरीवालों और छोटे उद्यमियों को अपने स्वदेशी उत्पादों की बिक्री के लिए एक सुव्यवस्थित और आधुनिक प्लेटफॉर्म प्रदान करेंगे।
'वोकल फॉर लोकल' अभियान को मिलेगी गति इस मॉल के जरिए खरीदारों और विक्रेताओं के बीच सीधा संपर्क स्थापित होगा, जिससे ग्राहकों को एक ही स्थान पर विभिन्न स्वदेशी उत्पाद आसानी से उपलब्ध होंगे और उत्पादकों को भी अपने उत्पादों के लिए बाजार मिलेगा। इसके अलावा, इस मॉल का उपयोग स्वदेशी मेलों, हाट और विभिन्न प्रदर्शनियों के लिए भी किया जा सकेगा, जिसके कारण 'वोकल फॉर लोकल' अभियान को और गति मिलेगी।
राज्य सरकार द्वारा 2026-27 के बजट में 'नमो स्वदेशी अर्बन मॉल' और स्वदेशी मेलों के आयोजन के लिए 45 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। यह पहल स्थानीय कारीगरों और छोटे उद्यमियों को सशक्त बनाएगी और आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

क्रूड ऑयल वायदा में 350 रुपये, सोना वायदा में 200 रुपये और चांदी वायदा में 5009 रुपये की वृद्धि

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 155534.62 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 25132.87 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 130400.78 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मार्च वायदा 40170 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 5100.36 करोड़ रुपये का हुआ।
कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 12105.36 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 162799 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 162991 रुपये और नीचे में 161076 रुपये पर पहुंचकर, 161789 रुपये के पिछले बंद के सामने 200 रुपये या 0.12 फीसदी की तेजी के संग 161989 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी मार्च वायदा 187 रुपये या 0.14 फीसदी की तेजी के संग 132208 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल मार्च वायदा 13 रुपये या 0.08 फीसदी की तेजी के संग 16611 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 161112 रुपये के भाव पर खूलकर, 162463 रुपये के दिन के उच्च और 161020 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 271 रुपये या 0.17 फीसदी की तेजी के संग 162050 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन मार्च वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 162399 रुपये के भाव पर खूलकर, 162965 रुपये के दिन के उच्च और 161700 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 162563 रुपये के पिछले बंद के सामने 124 रुपये या 0.08 फीसदी की तेजी के संग 162687 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।
चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा 269212 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 274665 रुपये और नीचे में 266174 रुपये पर पहुंचकर, 268491 रुपये के पिछले बंद के सामने 5009 रुपये या 1.87 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 273500 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 4555 रुपये या 1.66 फीसदी की तेजी के संग 278780 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 4330 रुपये या 1.58 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 278809 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

कमोडिटी वायदाओं में 25132 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 130400 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 12105 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 40170 पॉइंट के स्तर पर

मेटल वर्ग में 1882.91 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मार्च वायदा 1.1 रुपये या 0.09 फीसदी बढ़कर 1204.7 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता मार्च वायदा 40 पैसे या 0.12 फीसदी बढ़कर 325.9 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इसके सामने एल्यूमीनियम मार्च वायदा 2.55 रुपये या 0.74 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 347.2 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मार्च वायदा 10 पैसे या 0.05 फीसदी चढ़कर 188.4 रुपये प्रति किलो हुआ।
इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 10913.57 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 8431 रुपये के भाव पर खूलकर, 8829 रुपये के दिन के उच्च और 8314 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 350 रुपये या 4.32 फीसदी की बढ़त के साथ 8457 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा 353 रुपये या 4.36 फीसदी की मजबूती के साथ 8458 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस मार्च वायदा 304 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 305.8 रुपये और नीचे में 293.4 रुपये पर पहुंचकर, 296.2 रुपये के पिछले बंद के सामने 70 पैसे या 0.24 फीसदी घटकर 295.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मार्च वायदा 70 पैसे या 0.24 फीसदी टूटकर 295.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मार्च वायदा 1004 रुपये पर खूलकर, 5.6 रुपये या 0.56 फीसदी गिरकर 992.9 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।
कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 6599.05 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 5506.32 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1070.36 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 632.82 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 2.23 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 169.76 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 8669.09 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2213.30 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 5.36 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन कैंडी के वायदाओं में 1.28 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 10684 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 61393 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 30481 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 431797 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 61611 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 6802 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 18243 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 65990 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 28757 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 25643 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 40100 पॉइंट पर खूलकर, 40200 के उच्च और 40100 के नीचले स्तर को छूकर, 137 पॉइंट बढ़कर 40170 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल
ई-निविदा सूचना
निविदा संख्या: SnT_RTM_26_01_SIGNAL, दिनांक: 10.03.2026. कार्य का नाम: नीमच स्टेशन: नीमच - बड़ी सादरी नई लाइन परियोजना की कनेक्टिविटी के लिए आंतरिक कार्य करना से संबंधित सिग्नलिंग सामग्री की आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और चालू करना। **कार्य की अनुमानित लागत:** रु 1,55,47,815.44. **बयाना राशि:** रु 2,27,700/-. **निविदा बंद करने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 06.04.2026 समय 15:00 बजे तक। **निविदा खुलने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 06.04.2026 समय 15:30 बजे के बाद। **कार्य पूरा करने की अवधि:** 12 माह। **निविदा अनुभाग कार्यालय प्रभारी और बोली खोलने का स्थान:** सीनियर डीएसटीई रतलाम, डीआरएम कार्यालय रतलाम म.प्र. निविदा सिर्फ ऑनलाइन E-निविदा पोर्टल **www.ireps.gov.in** पर देखा व जमा किया जा सकता है। **DE/6/1/505**
हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल
ई-निविदा सूचना
निविदा संख्या: SnT_RTM_26_02_SIGNAL, दिनांक: 10.03.2026. कार्य का नाम: बेराच केबिन में एक साथ रिसेप्शन सुविधा के साथ पूर्ण लंबाई की दूसरी लूप लाइन के प्रावधान के संबंध में सिग्नलिंग सामग्री की आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और कमीशनिंग। **कार्य की अनुमानित लागत:** रु 1,13,44,412.04. **बयाना राशि:** रु 2,06,700/-. **निविदा बंद करने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 07.04.2026 समय 15:00 बजे तक। **निविदा खुलने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 07.04.2026 समय 15:30 बजे के बाद। **कार्य पूरा करने की अवधि:** 09 माह। **निविदा अनुभाग कार्यालय प्रभारी और बोली खोलने का स्थान:** सीनियर डीएसटीई रतलाम, डीआरएम कार्यालय रतलाम म.प्र. निविदा सिर्फ ऑनलाइन E-निविदा पोर्टल **www.ireps.gov.in** पर देखा व जमा किया जा सकता है। **DE/6/1/506**
हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

‘वन बूथ, वन योग क्लास’ का संकल्प: मोटापे के खिलाफ जनआंदोलन बनता गुजरात का स्वास्थ्य अभियान

(जीएनएस)। गुजरात में बढ़ते मोटापे और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों को लेकर राज्य सरकार ने एक नई और व्यापक पहल की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य केवल स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाना ही नहीं बल्कि योग को समाज के हर स्तर तक पहुंचाना भी है। इसी दिशा में राज्य के विधायकों को एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है कि वे अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में योग को जनआंदोलन का रूप दें। इस पहल का केंद्रीय विचार ‘वन बूथ, वन योग क्लास’ है, जिसके माध्यम से हर मतदान बूथ क्षेत्र में कम से कम एक नियमित योग कक्षा आयोजित करने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार का मानना है कि यदि इस अभियान को स्थानीय स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह राज्य में बढ़ते मोटापे को नियंत्रित करने और लोगों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए गांधीनगर में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका नाम ‘एक कदम योगमय विधानसभा तरफ’ रखा गया। यह कार्यक्रम Gujarat State Yoga Board द्वारा नए विधायक निवासों में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में राज्य विधानसभा के स्पीकर Shankar Chaudhary की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। इस अवसर पर विधायकों को यह समझाने की कोशिश की गई कि योग को केवल व्यक्तिगत अभ्यास तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने के लिए जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

कार्यक्रम के दौरान विधायकों को अपने निर्वाचन क्षेत्रों में योग से जुड़ी गतिविधियों को बढ़ावा देने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करने का अवसर मिला। उन्हें बताया गया कि यदि प्रत्येक बूथ क्षेत्र में योग कक्षाएं शुरू की जाती हैं, तो हजारों लोगों तक स्वास्थ्य का संदेश पहुंचाया जा सकता है। इस पहल का उद्देश्य केवल शारीरिक व्यायाम को बढ़ावा देना नहीं है, बल्कि योग को एक ऐसी जीवनशैली के रूप में स्थापित करना है जो मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करती है।

यह अभियान राज्य सरकार के ‘स्वस्थ गुजरात, मेदस्विता मुक्त गुजरात’ मिशन का हिस्सा है। इस मिशन के माध्यम से राज्य सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि लोग मोटापे और उससे जुड़ी बीमारियों के प्रति जागरूक हों और स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं। आज के समय में मोटापा केवल सौंदर्य से जुड़ा मुद्दा नहीं रह गया है, बल्कि यह मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता जा रहा है। ऐसे में सरकार का मानना है कि योग जैसे पारंपरिक और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित अभ्यास को बढ़ावा देकर इस समस्या से काफी हद तक निपटा जा सकता है।

इस अभियान को राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रेरणा मिली है। प्रधानमंत्री Narendra Modi ने अपने लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम Mann Ki Baat में हाल ही में बढ़ते मोटापे के खतरे पर चिंता व्यक्त की थी। उन्होंने देशवासियों से स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने की अपील की थी। गुजरात सरकार ने इस संदेश को गंभीरता से लेते हुए इसे राज्यव्यापी अभियान के रूप में आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

राज्य के मुख्यमंत्री Bhupendra Patel ने भी हाल ही में विधानसभा सत्र के दौरान घोषणा की थी कि इस वर्ष को ‘स्वस्थ गुजरात’ अभियान वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। उनका मानना है कि यदि समाज का हर वर्ग स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होगा, तो राज्य का समग्र विकास भी अधिक प्रभावी ढंग से संभव हो सकेगा। इसी दृष्टिकोण से पूरे राज्य में योग, फिटनेस और स्वस्थ जीवनशैली से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इस पहल के संचालन में राज्य सरकार के कई वरिष्ठ नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। कार्यक्रमों का नेतृत्व Harsh Sanghavi कर रहे हैं, जबकि इसे खेल मंत्री Jairam Gamit के मार्गदर्शन में आगे बढ़ाया जा रहा है। वहीं प्रशासनिक स्तर पर इन गतिविधियों की निगरानी शीशपाल राजपूत द्वारा की जा रही है, ताकि अभियान को व्यवस्थित और प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके।

गांधीनगर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विधायकों को यह भी सुझाव दिया गया कि वे अपने क्षेत्रों में ‘योगमय विधानसभा’ की अवधारणा को साकार करें। इसका अर्थ यह है कि विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक बूथ स्तर पर योग की नियमित गतिविधियां आयोजित हों और अधिक से अधिक लोगों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए। इससे न केवल लोगों का स्वास्थ्य बेहतर होगा, बल्कि समाज में सकारात्मक ऊर्जा और अनुशासन की भावना भी विकसित होगी।

अधिकारियों ने इस बात पर जोर दिया कि योग को केवल एक शारीरिक व्यायाम के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह एक ऐसी जीवनशैली है जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है। योग के साथ यदि संतुलित आहार और नियमित दिनचर्या को भी अपनाया जाए, तो मोटापे और उससे जुड़ी कई बीमारियों को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

Gujarat State Yoga Board के अनुसार, राज्य में अब तक उनके विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग पचास लाख लोगों को योग से जोड़ा जा चुका है। यह संख्या अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि लोगों में योग के प्रति रुचि और जागरूकता तेजी से बढ़ रही है। हालांकि बोर्ड का लक्ष्य इससे भी आगे जाने का है। वर्तमान अभियान के तहत यह प्रयास किया जा रहा है कि योग की पहुंच बढ़ाकर लगभग पांच करोड़ नागरिकों तक पहुंचाई जाए।

सरकार का मानना है कि यदि विधायक, स्थानीय समुदाय और स्वयंसेवी संगठन मिलकर इस पहल को आगे बढ़ाएं, तो यह लक्ष्य आसानी से हासिल किया जा सकता है। इस प्रकार यह अभियान केवल सरकारी कार्यक्रम न रहकर एक व्यापक सामाजिक आंदोलन का रूप ले सकता है। इससे न केवल लोगों के स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि राज्य की कार्यक्षमता और उत्पादकता पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

विशेषज्ञों का मानना है कि आज के समय में जब शहरी जीवनशैली, असंतुलित खानपान और शारीरिक गतिविधियों की कमी के कारण मोटापा तेजी से बढ़ रहा है, तब योग जैसे पारंपरिक उपायों को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। गुजरात की यह पहल अन्य राज्यों के लिए भी एक प्रेरणादायक मॉडल बन सकती है।

अंततः इस अभियान का उद्देश्य केवल मोटापा कम करना नहीं, बल्कि एक स्वस्थ, सक्रिय और जागरूक समाज का निर्माण करना है। यदि ‘वन बूथ, वन योग क्लास’ की अवधारणा सफल होती है, तो यह न केवल गुजरात बल्कि पूरे देश के लिए एक उदाहरण बन सकती है। यही वह दिशा है जिसमें राज्य सरकार ‘विकसित गुजरात, विकसित भारत’ के व्यापक लक्ष्य को साकार करने की कोशिश कर रही है, जहां स्वस्थ नागरिक ही मजबूत और समृद्ध राष्ट्र की आधारशिला बनते हैं।

गैर-किराया राजस्व (NFR) में भावनगर रेलवे मंडल का दबदबा,वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सहित 06 रेल अधिकारी-कर्मचारी सम्मानित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे ने गैर-किराया राजस्व (Non-Fare Revenue – NFR) के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए लगातार दूसरे वर्ष संपूर्ण भारतीय रेल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस गौरवपूर्ण सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले पश्चिम रेलवे के विभिन्न मंडलों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दिनांक 11.03.2026 (बुधवार) को चर्चगेट स्थित मुख्यालय में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रिंसिपल मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (PCCM) श्री तरुण जैन द्वारा सम्मानित किया गया।

इस उपलब्धि के क्रम में भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक (Sr. DCM) श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के कुशल नेतृत्व तथा वाणिज्य विभाग की टीम के उत्कृष्ट कार्य की सराहना की गई। इस अवसर पर भावनगर मंडल के दो (02) अधिकारियों एवं चार (04) कर्मचारियों को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। समारोह में मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (यात्री सेवाएं) श्री स्वप्निल वालिंगकर सहित मुख्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

भावनगर मंडल की उपलब्धियां

उल्लेखनीय है कि पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा गैर-किराया राजस्व (Non-Fare Revenue) के क्षेत्र में निरंतर प्रगति की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान मंडल ने लगभग 3.89 करोड़ का गैर-किराया राजस्व अर्जित किया। वहीं वित्तीय वर्ष 2025-26 (फरवरी 2026 तक) के दौरान मंडल द्वारा लगभग 3.94 करोड़ का गैर-किराया राजस्व प्राप्त किया गया है।

मंडल द्वारा राजस्व बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न नवाचारी पहलों को लागू किया गया है। इसी क्रम में पहली बार भावनगर मंडल में जूनागढ़ स्टेशन पर गेम ज़ोन, डीआरएम कार्यालय कैंटीन, मंडल रेलवे अस्पताल कैंटीन, वेरावल स्टेशन पर रिटायरिंग रूम/वेटिंग हॉल/वेटिंग रूम तथा वेरावल स्टेशन पर क्लोक रूम के लिए अनुबंध प्रदान किए गए हैं। इन पहलों के माध्यम से मंडल को गैर-किराया राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्त हुई है।

सम्मानित होने वाले भावनगर मंडल के अधिकारी-कर्मचारी

वाणिज्य विभाग में उत्कृष्ट कार्य के लिए भावनगर मंडल के जिन अधिकारी-कर्मचारियों को सम्मानित किया गया, उनके नाम इस प्रकार हैं –

1.श्री अतुल कुमार त्रिपाठी – वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, भावनगर

2.सुश्री निलादेवी झाला – मंडल वाणिज्य प्रबंधक, भावनगर

3.श्री जिंजाला जगदिश मनसुखभाई – मंडल वाणिज्य निरीक्षक (गैर-किराया राजस्व)

4.श्री जादव दर्शन घनश्यामभाई – जूनियर क्लर्क

5.श्री शशिकांत शर्मा – सीसी/टीसी

6.श्री भार्गव पंडया – मुख्य वाणिज्य निरीक्षक, भावनगर

भावनगर मंडल की इस उपलब्धि ने न केवल मंडल की प्रतिष्ठा को और सुदृढ़ किया है, बल्कि पश्चिम रेलवे को भारतीय रेल में अग्रणी बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस अवसर पर भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने वाणिज्य विभाग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट कार्य करते रहने के लिए प्रेरित किया।

पश्चिम रेलवे और एक्सिस बैंक के बीच समझौता ज्ञापन (MoU)

दो दिवंगत रेल कर्मचारियों के परिजनों को 10-10 लाख की वित्तीय सहायता

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल और एक्सिस बैंक के मध्य हुए समझौता ज्ञापन (MoU) के अंतर्गत आज दिनांक 12.03.2026 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर एक्सिस बैंक की ओर से दो दिवंगत रेल कर्मचारियों के आश्रित परिजनों को 10-10 लाख की वित्तीय सहायता राशि के चेक प्रदान किए गए।

वित्तीय सहायताः दिवंगत कर्मचारी श्री मोहनलाल मीना (TCM-I, टेलिकॉम/महेसाणा) तथा श्री महेशकुमार लिम्बाचिया (लोको पायलट, CTCC/अहमदाबाद) की प्राकृतिक मृत्यु के उपरांत उनके परिजनों को 10-10 लाख की सहायता राशि का चेक मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश, एक्सिस बैंक के डायरेक्टर श्री गुरविंदरजीत सिंह संधु एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में सौंपी गई।

बीमा सुरक्षाः वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री सिद्धार्थ ने बताया कि इस MoU के तहत रेल कर्मचारियों को आधुनिक बैंकिंग सुविधाओं के साथ-साथ व्यापक बीमा लाभ भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। MoU के तहत मिलने वाले मुख्य लाभः एक्सिस बैंक और अहमदाबाद मंडल के बीच हुए इस समझौते के तहत कर्मचारियों के ‘जीरो बैलेंस सैलरी अकाउंट’ खोले जाते हैं, जिनमें निम्नलिखित सुरक्षा कवर शामिल हैं:

1.व्यक्तिगत दुर्घटना बीमाः दुर्घटना में मृत्यु या पूर्ण स्थायी विकलांगता पर 100 लाख तक का कवर।

2.प्राकृतिक मृत्यु कवरः 60 वर्ष की आयु तक प्राकृतिक मृत्यु की स्थिति में 10 लाख का ग्रुप टर्म लाइफ कवर।

3.शिक्षा सहायताः दुर्घटना मृत्यु के मामलों में बच्चों की शिक्षा हेतु 8 लाख तक की सहायता।

4.विकलांगता लाभः आंशिक स्थायी विकलांगता की स्थिति में मूल कवर का 75% तक लाभ।

मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने इस अवसर पर कहा, “पश्चिम रेलवे और एक्सिस बैंक के बीच हुआ यह समझौता हमारे रेल कर्मचारियों और उनके परिवारों के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक ठोस कदम है। इससे न केवल कर्मचारियों को बेहतर बैंकिंग सेवाएं मिल रही हैं, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में उनके परिजनों को सामाजिक और वित्तीय सुरक्षा भी सुनिश्चित हो रही है।”

सूरत नगर निगम की भर्ती घोषणा का स्वागत किया गया है, लेकिन सफाई कर्मचारियों सहित रिक्त पदों को तत्काल भरने की मांग की गई है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

सूरत नगर निगम आयुक्त नागराजन को अधिकारी श्रेणी और तकनीकी क्लर्क आदि पदों को भरने के लिए आज जारी किए गए विज्ञापन के लिए हार्दिक बधाई। सूरत नगर निगम में पिछले 9 वर्षों से अधिक समय से सफाईकर्मी, बेलदार, क्लर्क, तकनीकी सहायक, ड्राइवर, स्टाफ नर्स, जूनियर फार्मासिस्ट, रखरखाव सहायक, मार्शल (चौकीदारी), नगर योजनाकार, चिकित्सा अधिकारी, सहायक अभियंता, प्रयोगशाला तकनीशियन, चिड़ियाघर कर्मचारी आदि के पद रिक्त थे, लेकिन लंबे समय से भर्ती नहीं हुई थी। गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस, जो अब कर्मचारियों के हितों से अवगत है और सूरत नगर निगम को इन रिक्तियों को भरने के लिए जागरूक कर रही है, ने सूरत नगर निगम आयुक्त, महापौर और स्थायी समिति के अध्यक्ष को बार-बार लिखित और मौखिक अभ्यावेदन दिए हैं। हालांकि, निर्दयी शासकों द्वारा इस मामले में कोई कार्रवाई न किए जाने के कारण, अंततः इस संगठन ने चरणबद्ध तरीके से अभ्यावेदन दिए।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

04/07/2024, 03/01/2025, 27/11/2025 और 24/12/2025 को लिखित और मौखिक अभ्यावेदन दिए जाने के बावजूद, ऐसा प्रतीत होता है कि सूरत नगर निगम के महापौर, कार्यवाहक महापौर और स्थायी समिति के अध्यक्ष जैसे कर्मचारियों/अधिकारियों की भर्ती रोक दी गई है। जैसे ही इनका कार्यकाल समाप्त होता है, भर्ती विज्ञापन प्रकाशित कर दिया जाता है। सूरत नगर निगम ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी के क्लर्क, तकनीकी सहायक, चालक, स्टाफ नर्स, जूनियर फार्मासिस्ट, रखरखाव सहायक, मार्शल (चौकीदारी), नगर योजनाकार, चिकित्सा अधिकारी, सहायक अभियंता, प्रयोगशाला तकनीशियन, चिड़ियाघर कर्मचारी आदि पदों के लिए विज्ञापन जारी किया है, लेकिन

सफाई कर्मचारी, बेलदारो, आया, वार्डबॉय आदि पदों पर भर्ती करने से कौन रोक रहा है? इन पदों पर भर्ती के लिए तत्काल विज्ञापन जारी करने की मांग की गई है।

सूरत नगर निगम का क्षेत्रफल काफी बढ़ गया है, लेकिन स्वच्छता का महत्वपूर्ण कार्य करने वाले सफाई कर्मचारियों और बेलदारों के 6000 से अधिक पद रिक्त हैं। प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों के 4000 से अधिक पद भी रिक्त हैं। शहर का क्षेत्रफल बढ़ने के साथ-साथ कर्मचारियों की संख्या भी बढ़नी चाहिए। वर्ष 2022 में आम सभा में सफाई कर्मचारियों, बेलदारों और अन्य कर्मचारियों/अधिकारियों के लगभग 1500 पदों पर भर्ती का प्रस्ताव पारित किया गया था। लेकिन आज तक उस प्रस्ताव का ठीक से पालन नहीं हुआ है। निर्वाचित पार्षदों को केवल अपने काम में ही रुचि थी।

ठेकेदार, सूरत नगर निगम द्वारा संविदा पर रखे गए सफाई कर्मचारियों, ड्राइवरों, कंप्यूटर ऑपरेटरों और नर्सिंग स्टाफ के लिए निर्धारित वेतन का आधा भी नहीं देते हैं। नगर निगम के अधिकारी और पदाधिकारी ऐसा करने के लिए विवश हैं क्योंकि वे ठेकेदारों से कुछ नहीं मांग सकते। कर्मचारियों के कम वेतन का मुद्दा उठाने पर अधिकारियों ने इस मामले को टाल दिया, मानो वे पदाधिकारियों और ठेकेदारों से डरते हों। सूरत नगर निगम के कार्यकारी कार्मिक अधिकारी के पत्र संख्या GAD/EST/P/U/80, दिनांक 03/08/2024 के अनुसार, सूरत नगर निगम द्वारा कंप्यूटर ऑपरेटर, ड्राइवर, नर्स, वार्ड बॉय, आया और सफाई कर्मचारियों को भुगतान किया जाने वाला वेतन क्रमशः 19300/-, 19080/-, 22601/-, 19505/-, 19505/-, 19505/-, 19505/-, 19505/- है।

लेकिन ठेकेदार द्वारा दिया जाने वाला वेतन क्रमशः 9000/-, 9000/-, 15000/-, 9000/-, 9000/-, 9000/- है। इस शोषणकारी पद्धति के खिलाफ यूनियनों के बार-बार विरोध के बावजूद, कर्मचारियों का वित्तीय शोषण जारी है और ठेकेदारों को कर्मचारियों से अधिक वेतन मिलता है। इन सभी तथ्यों से अवगत होने के बावजूद, अधिकारियों और पदाधिकारियों ने ठेकेदारों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की है। गुजरात प्रदेश नगर निगम कर्मचारी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष भाई लाल बी. वैष्णव, महासचिव कांतिभाई सोलंकी, अखिल भारतीय सफाई मजदूर के अध्यक्ष शशिकांतभाई सोलंकी, सूरत नगर निगम कर्मचारी (स्टाफ) के अध्यक्ष मोहम्मद इकबाल शेख और महासचिव देवेंद्र प्रजापति आदि ने सूरत नगर निगम के सभी रिक्त पदों को भरने की मांग की है।

कृषि रसायन क्षेत्र में नया अवसरः 16 मार्च से खुलेगा जीएसपी क्रॉप साइंस का 400 करोड़ रुपये का आईपीओ

(जीएनएस)। New Delhi। शेयर बाजार में निवेश के इच्छुक निवेशकों के लिए एक और बड़ा अवसर सामने आया है। अहमदाबाद स्थित कृषि रसायन कंपनी GSP Crop Science Limited अपना प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम यानी आईपीओ 16 मार्च को खोलने जा रही है। इस आईपीओ के जरिए कंपनी करीब 400 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रही है। कंपनी के मुताबिक निवेशक 16 मार्च से 18 मार्च तक इस निर्गम में बोली लगा सकेंगे, जबकि इसके शेयरों का सूचीकरण 24 मार्च को देश के प्रमुख शेयर बाजारों पर प्रस्तावित है।

कंपनी ने अपने आईपीओ के लिए प्रति शेयर 304 रुपये से 320 रुपये तक का प्राइस बैंड तय किया है। इसका मतलब है कि निवेशक इसी मूल्य सीमा के भीतर कंपनी के शेयरों के लिए आवेदन कर सकेंगे। संस्थागत निवेशकों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एंकर निवेशकों के लिए बोली प्रक्रिया 13 मार्च को खोली जाएगी। आम तौर पर एंकर निवेशकों के जरिए किसी भी आईपीओ को शुरुआती स्थिरता और भरोसा मिलता है, इसलिए बाजार विशेषज्ञ इस प्रक्रिया को काफी महत्वपूर्ण मानते हैं।

यह आईपीओ कुल 400 करोड़ रुपये का होगा, जिसमें दो हिस्से शामिल हैं। पहला हिस्सा नए शेयर जारी करने का है, जिसके तहत कंपनी करीब 240 करोड़ रुपये के नए इक्विटी शेयर जारी करेगी। इसके अलावा दूसरा हिस्सा ऑफर फॉर सेल का है, जिसके तहत मौजूदा शेयरधारक लगभग 160 करोड़ रुपये मूल्य के करीब 50 लाख शेयर बाजार में बेचेंगे। ऑफर फॉर सेल का मतलब यह होता है कि कंपनी के मौजूदा निवेशक या प्रमोटर अपने कुछ शेयर आम निवेशकों को बेचते हैं।

निवेशकों के लिए इस आईपीओ में आवेदन करने के लिए न्यूनतम एक लॉट खरीदना अनिवार्य होगा। कंपनी ने एक लॉट में 46 शेयर निर्धारित किए हैं। यदि कोई निवेशक अधिकतम प्राइस बैंड यानी 320 रुपये प्रति शेयर के हिसाब से आवेदन करता है, तो उसे एक लॉट के लिए करीब 14,720 रुपये का निवेश करना होगा। खुदरा निवेशकों के लिए यह राशि अपेक्षाकृत सुलभ मानी जा रही है, इसलिए बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि इस आईपीओ में खुदरा निवेशकों की अच्छी भागीदारी देखने को मिल सकती है।

कंपनी ने बताया है कि आईपीओ के जरिए जुटाई जाने वाली नई पूंजी का एक बड़ा हिस्सा कर्ज चुकाने में इस्तेमाल किया जाएगा। लगभग 170 करोड़ रुपये का उपयोग कंपनी अपने मौजूदा कर्ज को कम करने के लिए करेगी। इससे कंपनी की वित्तीय स्थिति मजबूत होने की उम्मीद है। इसके अलावा शेष राशि का उपयोग सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों, व्यवसाय विस्तार और परिचालन जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाएगा। अहमदाबाद स्थित Ahmedabad में मुख्यालय रखने वाली जीएसपी क्रॉप साइंस लिमिटेड कृषि रसायन क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय है।

पश्चिम रेलवे का गैर-किराया राजस्व दोगुना करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य

(जीएनएस)। प्रधानमंत्री कार्यालय के भारतीय रेल के गैर-किराया राजस्व (NFR) को बढ़ाने के निर्देशों के अनुरूप, पश्चिम रेलवे ने गैर-किराया स्रोतों से अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पश्चिम रेलवे के प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक श्री तरुण जैन ने गैर-किराया राजस्व बढ़ाने की रणनीतियों पर विचार-विमर्श के लिए पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधकों के साथ एक उच्चस्तरीय विचार-मंथन बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक के दौरान श्री तरुण जैन ने कहा कि “हमारा उद्देश्य यात्रियों को मूल्यवर्धित सेवाएँ प्रदान करना है। हमारे डिजिटल लाउंज और मिनी मॉल की सफलता यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि यात्री अब आधुनिक, प्रौद्योगिकी आधारित तथा गुणवत्तापूर्ण सेवाओं की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। गैर-किराया राजस्व को दोगुना कर हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि पश्चिम रेलवे अपने वाणिज्यिक परिसंपत्तियों की राजस्व क्षमता को नए दृष्टिकोण से देखे।”

चालू वित्तीय वर्ष में फरवरी 2026 तक पश्चिम रेलवे ने गैर-किराया राजस्व के रूप में 117 करोड़ अर्जित किए हैं, जिससे पश्चिम रेलवे बेहतर प्रदर्शन करने वाले जोनों में शामिल हो गया है। भारतीय रेल के गैर-किराया राजस्व को 750 करोड़ से बढ़ाकर 1,500 करोड़ करने के राष्ट्रीय निर्देश के अनुरूप, पश्चिम रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2026–27 के लिए 239.24 करोड़ का लक्ष्य निर्धारित किया है। श्री तरुण जैन ने कहा कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मुंबई सेंट्रल स्थित डिजिटल लाउंज, रतलाम स्टेशन पर मिनी मॉल तथा अहमदाबाद में एसी सह डिजिटल लाउंज जैसे सफल नवाचार पहलों को दोहराने की आवश्यकता होगी, जिन्हें सराहना मिल चुकी है। ये पहल यात्रियों की सुविधा और आराम को अधिकतम करने के उद्देश्य से की गई हैं। उन्होंने आगे कहा कि समय की मांग है कि पारंपरिक विज्ञापन के दायरे से आगे बढ़कर नवोन्मेषी दृष्टिकोण अपनाए जाएँ। बैठक के दौरान कुछ नई पहल पर चर्चा की गई, जिनमें पश्चिम रेलवे पर उपयुक्त स्थानों की पहचान कर ब्रांडेड कियोस्क और एक्सपीरियंस जोन, परिसंपत्तियों का मुद्रीकरण, अधिक यात्री आवागमन वाले स्टेशनों पर डिजिटल आउट-ऑफ-होम (DOOH) विज्ञापन का विस्तार तथा रेलवे स्टेशनों को सजीव वाणिज्यिक केंद्रों के रूप में विकसित करना शामिल है।

देवरिया से लापता दो किशोरियां सूरत में बरामद पुलिस की सक्रियता से परिवार को मिली राहत

(जीएनएस)। Deoria। उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले से लापता हुई दो किशोरियों को पुलिस ने गुजरात के सूरत शहर से बरामद कर लिया है। कई दिनों की तलाश और तकनीकी जांच के बाद पुलिस टीम ने दोनों को सुरक्षित ढूंढ निकाला और उन्हें सकुशल वापस देवरिया ले आई। इस घटना से जहां परिवार के लोगों को बड़ी राहत मिली है, वहीं स्थानीय स्तर पर भी पुलिस की कार्रवाई की सराहना की जा रही है। अधिकारियों के अनुसार दोनों किशोरियों के मिलने के बाद अब मामले की विस्तृत जांच की जा रही है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि वे किन परिस्थितियों में घर से गई थीं और इस पूरे घटनाक्रम में किसी अन्य व्यक्ति की भूमिका रही या नहीं। पुलिस के अनुसार यह मामला देवरिया जिले के Gauri Bazar Police Station क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। 6 मार्च 2026 को एक महिला ने थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में उसने बताया कि उसकी बहन की बेटी होली के अवसर पर 3 मार्च को उसके घर आई थी। परिवार में त्योहार की तैयारियां चल रही थीं और सभी लोग सामान्य रूप से अपने कामकाज में व्यस्त थे। इसी दौरान 5 मार्च की सुबह करीब पांच बजे अचानक उसकी अपनी बेटी और बहन की बेटी दोनों घर से गायब हो गईं। जब परिवार के लोगों की नींद खुली और उन्होंने दोनों को घर में नहीं पाया तो पहले आसपास तलाश की गई, लेकिन कहीं कोई पता नहीं चला।

परिजनों ने रिश्तेदारों और परिचितों के यहां भी जानकारी ली, लेकिन दोनों किशोरियों का कोई सुराग नहीं मिला। धीरे-धीरे परिवार की चिंता बढ़ने लगी और उन्हें शक हुआ कि शायद कोई अज्ञात व्यक्ति दोनों को अपने साथ ले गया है। इसके बाद परिवार ने पुलिस से संपर्क किया और थाने में तहरीर देकर मामले की सूचना दी। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने तुरंत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

जांच की शुरुआत में पुलिस के सामने कई चुनौतियां थीं, क्योंकि दोनों किशोरियों के अचानक गायब होने से कोई स्पष्ट सुराग नहीं मिल रहा था। इसके बावजूद पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तकनीकी साक्ष्यों और स्थानीय स्तर पर पूछताछ के जरिए जांच आगे बढ़ाई। इस दौरान आसपास के लोगों से पूछताछ की गई और संभावित स्थानों पर तलाश अभियान चलाया गया।

मामले की जांच का नेतृत्व कर रहे अधिकारियों ने बताया कि धीरे-धीरे जांच में कुछ अहम सुराग मिले, जिनके आधार पर पुलिस को यह संकेत मिला कि दोनों किशोरियां संभवतः उत्तर प्रदेश से बाहर चली गई हैं। इसके बाद पुलिस ने तकनीकी निगरानी और अन्य संसाधनों की मदद से उनकी लोकेशन का पता लगाने की कोशिश की। इसी दौरान यह जानकारी सामने आई कि दोनों किशोरियां गुजरात के औद्योगिक शहर Surat में मौजूद हो सकती हैं। यह जानकारी मिलते ही पुलिस ने तुरंत एक विशेष टीम का गठन किया। अपर पुलिस अधीक्षक (उत्तरी) Anand Kumar Pandey के निर्देशन में यह टीम गठित की गई, जिसमें स्थानीय थाने के अधिकारी और अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे। टीम का नेतृत्व Dr. Mahendra Kumar कर रहे थे। पुलिस टीम ने तकनीकी साक्ष्यों और उपलब्ध सुरागों के आधार पर सूरत पहुंचकर तलाश अभियान शुरू किया।

जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि दोनों किशोरियां सूरत के Dindoli थाना क्षेत्र में मौजूद हैं। इसके बाद पुलिस ने स्थानीय स्तर पर जानकारी जुटाई और सावधानीपूर्वक कार्रवाई करते हुए दोनों किशोरियों को वहां से बरामद कर लिया। बरामदगी के समय यह सुनिश्चित किया गया कि दोनों सुरक्षित हैं और उन्हें किसी तरह की शारीरिक क्षति नहीं पहुंची है।

पुलिस टीम ने आवश्यक औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद दोनों किशोरियों को अपने साथ लेकर देवरिया के लिए रवाना किया। उन्हें सकुशल वापस जिले में लाया गया, जहां आगे की कानूनी प्रक्रिया पूरी की जा रही है। अधिकारियों के अनुसार किशोरियों की चिकित्सकीय जांच कराई जाएगी और उनका बयान भी दर्ज किया जाएगा, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि वे किन परिस्थितियों में घर से गई थीं। पुलिस का कहना है कि किशोरियों के बयान इस मामले में बेहद महत्वपूर्ण होंगे। यदि जांच में किसी व्यक्ति की संलिप्तता सामने आती है या अपहरण से जुड़ा कोई तथ्य सामने आता है, तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।